Fortnightly per copy Rs. 4/- only

ओ३म्

3rd April 2018

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హింది-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month

वैदिक मिशन मुम्बई के तत्वावधान एवं आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के सहयोग से आयोजित वेदों में शिक्षा विज्ञान विषयक संगोष्ठी महत्त्वपूर्ण निर्णयों के साथ हुई सम्पन्न

6 से 8 जुलाई, 2018 को होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन, हरिद्वार में देश–विदेश के सभी गुरुकुल सम्मिलित होंगे

– स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

वर्तमान शिक्षा प्रणाली का विकल्प आर्ष शिक्षा प्रणाली ही हो सकती है

– प्रो. विट्ठलराव आर्य

केन्द्र में वैदिक शिक्षा बोर्ड बनाकर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को मान्यता दिलवाने एवं विशेष आर्थिक पैकेज (योजना) के क्रियान्वयन की माँग उठाई जायेगी गुरुकुल महासम्मेलन में

– स्वामी आर्यवेश

वेदों में शिक्षा विज्ञान के आधार पर वर्तमान शिक्षा प्रणाली में आमूल–चूल परिवर्तन होना चाहिए

– आचार्य सोमदेव शास्त्री

23 मार्च को भगतसिंह, राजगुरु व सुखदेव का 88वां बलिदान दिवस

राष्ट्रवाद की धधकती हुई ज्वाला थे भगतसिंह

23-24 वर्ष की अवस्था में राष्ट्र के लिए बलिदान होने वाले वीर सपूतों को कोटिशः नमन। शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले। वतन में मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।

एक हजार वर्ष से गुलाम रहने वाली भारतीय जनता की ठंडी रगों के खून को उबालने के लिए लाखों बलिदान हुए, जिनमें 23 वर्ष के भगतसिंह ने अंग्रेजी हुकूमत की जड़ों को झकझोर दिया। 8 अप्रैल 1929 को सेंट्रल एसेंबली में बम फेंककर बहरी अंग्रेजी हुकूमत के कान खोल देने वाले इन वीर सपूतों ने इंकलाब जिंदाबाद का गगनभेदी नारा लगाया।

सरदार भगतसिंह का यज्ञोपवीत संस्कार आर्य समाज लाहौर में हुआ था। उनके पिता किशनसिंह ने यज्ञवेदी पर बैठकर दिव्य संतान की प्रार्थना की थी। संयोग ऐसा बना कि जब भगतसिंह के चाचा अजीतसिंह और सुवर्ण सिंह जेल से छूटे, उसी दिन 27 सितंबर 1907 को भगतसिंह का जन्म हुआ। उनकी दादी ने उन्हें भागवान मानकर भगतसिंह नाम रखा।

वह परिवार ही क्रांतिकारी था

उनके पिता सरदार किशनसिंह बड़े धीर, स्थिर और ज्ञानी व्यक्ति थे, फिर भी उन्हें पुलिस से बचने के लिए नेपाल जाना पड़ा था। उनके चाचा सरदार अजीतसिंह को क्रांतिकारी आंदोलन के सिलसिले में बहुत दिनों तक नजरबंद किया जा चुका था। इसी प्रकार उनके एक अन्य चाचा सुवर्णसिंह भी किसी न किसी प्रकार से क्रांतिकारी आंदोलन से सम्बद्ध थे।

बचपन में उन्होंने ही यह प्रश्न उठाया कि हम बंदूकों की खेती क्यों नहीं करते?

सरदार भगतसिंह ने डीएवी स्कूल से मेट्रिकुलेशन पास किया। उसके बाद वे नेशनल कॉलेज में पढ़ने लगे, जहां उनका परिचय सुखदेव, भगवतीचरण यशपाल आदि से हुआ, जो बाद को चलकर बहुत प्रमुख क्रांतिकारी हुए। जब भगतसिंह ने एफए पास कर लिया, तब घरवाले, जो दूध के जले थे और फूंक-फूंककर छाछ पीते थे, यह चाहने लगे कि भगतसिंह की शादी हो जाए। भगतसिंह ने समझा कि यह यों ही बात है, जैसे हुआ करती है, टल जाएगी। इसलिए उन्होंने टालना शुरू किया। पर जब देखा कि बात टलनेवाली नहीं है और घरवाले शादी करने पर उतारू हैं, तो उन्होंने समझा कि शादी करके एक नवयुवती का जीवन नष्ट करने के बजाय घर से भाग चलना ही अच्छा है। तदनुसार वे वहां से भागे और भागकर दिल्ली पहुंचे और वहां अर्जुन पत्र में काम करने लगे। उन्होंने लायलपुर में एक भाषण दिया, जिसमें क्रांतिकारी पक्ष का जोरदार समर्थन किया गया और कहा गया कि प्रत्येक गुलाम जाति का अधिकार है कि वह जिस भी प्रकार चाहे और जिस भी प्रकार सम्भव हो, अपनी गुलामी की जंजीर को तोड़ डाले। इस पर पुलिस ने भगतसिंह पर राजद्रोह का मुकदमा चलाना चाहा। पर मुकदमा चल नहीं सका और भगतसिंह के नेतृत्व में और भी नौजवान आ गए। क्रांतिकारी दल बराबर जनता को साथ लेकर चलने की चेष्टा करता रहा। इसका प्रमाण यह है कि जब 1928 में साइमन कमीशन का ऐलान हुआ कि अंग्रेजी सरकार यहां आकर भारत के भविष्य के ढांचे का निर्णय करे, तो कांग्रेस ने तो केवल बायकाट का ही नारा दिया, पर क्रांतिकारी इससे आगे बढ़ गए और वे कमीशन के सदस्यों को ही मार डालना चाहते थे। इस संबंध में एक प्रयत्न भी हुआ, जिसमें मार्कंडेय, हरेंद्र भट्टाचार्य और मदनमोहन ने भाग लिया, पर वह सफल नहीं हुआ। कांग्रेस के नेतृत्व में ब्रिटेन से भेजे हुए साइमन का बायकाट चालू रहा। जब कमीशन लाहौर में 20 अक्टूबर 1928 को पहुंचा, तो उसका बायकाट कराते समय एक भीड़ का नेतृत्व करते हुए लाला लाजपतराय पर लाठियां पड़ी। चोट बहुत अधिक थी। लाला जी ने तभी बिस्तर पकड़ लिया और 17 नवम्बर, 1928 को इस चोट के कारण उनका देहांत हो गया। इस खबर से सारे देश में बहुत खलबली मच गई। क्रांतिकारियों ने यह सोचा कि यदि इस राष्ट्रीय अपमान का बदला न लिया गया, तो जनता को बहुत धक्का लगेगा और साइमन कमीशन के बायकाट से जो जोश उत्पन्न हुआ था, वह समाप्त हो जाएगा। तदनुसार यह निश्चय हुआ कि लाला लाजपतराय की हत्या के लिए जिम्मेदार पुलिस अफसर को मारा जाए।

इसके लिए चार व्यक्ति नियुक्त हुए 1. चंद्रशेखर आजाद, 2. भगतसिंह, 3. शिवराम राजगुरु और 4. जयगोपाल।

जब सैंडर्स नाम का पुलिस सुपरिंटेंडेंट अपनी मोटरसाइकिल पर पुलिस के दफ्तर से निकल रहा था, तो उस पर हमला हुआ। सैंडर्स वहीं पर गिर पड़ा और क्रांतिकारी भाग गए। इस मौके पर विजयकुमार सिंह भी आसपास रिजर्व के रूप में मौजूद थे। सैंडर्स की हत्या से सारे भारत में खुशी की लहर दौड़ गई, क्योंकि लोगों के सामने यह स्पष्ट हो गया कि एक न्यायालय ऐसा है, जहां भारतीयों के लिए भी न्याय हो सकता है। पर ब्रिटिश सरकार एकदम पागल हो गई और बड़ी कठिनाई से क्रांतिकारी लाहौर से बाहर निकल पाए। चंद्रशेखर आजाद को भागने में ज्यादा दिक्कत नहीं हुई, पर भगतसिंह को बहुत कौशल से बाहर निकलना पड़ा। वे शहीद भगवतीचरण बोहरा की पत्नी दुर्गादेवी और उनके शिशु पुत्र की सहायता से बाहर निकल पाए। इतिहास नाटकों से नहीं बदला करता, उसके लिए रक्त की आवश्यकता होती है। भगतसिंह ने इसके लिए अपना रक्त देने का निश्चय किया। उन्हें बहुत समझाया गया कि तुम पर लाहौरवाली हत्या का मुकदमा है। पर वे नहीं माने और कानपुर के बटुकेश्वर दत्त को साथ में लेकर उन्होंने 1929 को 8 अप्रैल को दिल्ली में असेंबली भवन में बम डाला। बम फेंकने का उद्देश्य किसी को मारना नहीं था, बल्कि जैसा कि उस समय बांटे पर्चों में बताया गया था, उद्देश्य था बहरों को सुनाना। इस पर्चे में यह स्पष्ट रूप से लिखा था कि भारतीय क्रांतिकारी दल का उद्देश्य समाजवाद की स्थापना करना है और हमारा नारा है, इंकलाब जिंदाबाद। भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी तथा विजय कुमार सिंह, महावीर सिंह, किशोरीलाल, शिव वर्मा, गया प्रसाद, जयदेव और कमलनाथ त्रिवेदी को आजन्म कालेपानी, कुंदनलाल को सात वर्ष और प्रेमदत्त को तीन साल की सजा हुई। मुकदमे की अपील प्रिवी कौंसिल तक की गई। पर फांसी की सजा बहाल रही और 23 मार्च, 1931 को भगतसिंह और उनके साथियों को फांसी दे दी गई।

अजमेर से रहा जुड़ाव

सरदार भगतसिंह का अजमेर शहर से विशेष जुड़ाव रहा है, वे दो बार अजमेर आए थे, एक बार 1928 में बिजौलिया किसान आंदोलन के संदर्भ में तथा दूसरी बार बम गिराने के बाद। वे किसान आंदोलन के कर्णधार विजयसिंह पथिक के पालबीचला वाले मकान में ठहरे थे। दोनों बार उनकी भेंट एवं विजयसिंह पथिक व अजमेर के जाने माने आर्यसमाजी क्रांतिकारी पंडित जियालाल आर्य से हुई।

सरदार भगतसिंह व भगवती चरण बोहरा के अध्यात्म गुरु तथा लौकिक संस्कृत व वेद व दर्शन के अप्रतिम आर्यसमाजी विद्वान आचार्य उदयवीर शास्त्री भी अंतिम दिनों में अजमेर स्थित गुलाब बाड़ी क्षेत्र में रहे थे। सरदार भगतसिंह ने जेल में रहते हुए अपने गुरु को श्रद्धाभाव व्यक्त करते हुए स्वयं के हस्ताक्षर सहित श्रीमद् भगवद्गीता की प्रति भेजी थी। आचार्य जी इस पुस्तक को अंतिम समय तक सहेजकर रखते तथा भगतसिंह की धधकती हुई राष्ट्रवादी भावना का जिक्र किया करते थे।

24 अगस्त 1908 को जन्मे सरदार भगतसिंह के अभिन्न साथी शिवराम हरि राजगुरु बटुकेश्वर दत्त के साथ अंग्रेज पुलिस अधिकारी जॉन सांडर्स की हत्या करने के केस में पुणे से गिरफ्तार हुए। राजगुरु महाराष्ट्र, पुणे जिले के खेड़ गांव में पैदा हुए थे, जिनके बलिदान को अमर करने के लिए वर्तमान में खेड़ गांव का नाम राजगुरु नगर है।

15 मई 1907 को पंजाब प्रांत के लुधियाना शहर के थापर परिवार में जन्मे सुखदेव को उसी केस में फांसी की सजा हुई। इसके साथ ही जेल में भूख हड़ताल के लिये इस महान क्रांतिकारी की विशेष चर्चा रहती थी। सरदार भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव का बलिदान भारत व पाकिस्तान दोनों के लिए विशेष महत्व रखता है, क्योंकि जिस लाहौर में इन अद्भुत क्रांतिकारियों को फांसी हुई थी, वह आज पाकिस्तान में स्थित है तथा दोनों ही देश ऐसे बलिदानियों के उत्सर्ग के कारण आजादी का सुख ले रहे हैं।

-डॉ. मोक्षराज,
पूर्व सदस्य राजस्थान संस्कृत अकादमी।

भगतसिंह के बहाने भारत-पाक सौहार्द

डा वेदप्रताप वैदिक

शहीद भगतसिंह अब भारत और पाकिस्तान की मैत्री के सूत्रध ार बनेंगे। हर २३ मार्च को अब उनकी पुण्यतिथि मनाई जाएगी। लाहौर में अब बड़ा समारोह हुआ करेगा, जिसे पाकिस्तानी और भारतीय मिलकर मनाया करेंगे। लाहौर में अब एक संग्रहालय भी बनेगा, जिसमें भगतसिंह के पत्र, उनसे संबंधित गुप्त सरकारी दस्तावेज, उनके लेख, उनके द्वारा इस्तेमाल की गई चीजें भी प्रदर्शित की जाएंगी। लाहौर के जिन घरों में उनका परिवार रहता रहा, उनको भी उचित महत्व दिया जाएगा। उनका स्मारक बनेगा और लाहौर की एक मुख्य सड़क भी उनके नाम पर रखी जाएगी। पाकिस्तानी सरकार का यह निर्णय स्वागत योग्य है। भारत और पाकिस्तान के जिन संगठनों के लगातार प्रयत्नों के कारण यह सब कुछ संभव हो रहा है, वे बधाई के पात्र हैं।

भगतसिंह का जन्म लाहौर में हुआ था और वे दयानंद एंग्लो-वैदिक कालेज में पढ़े थे। उनका परिवार पारंपरिक दृष्टि से सिख था लेकिन पिता लाहौर आर्यसमाज के सक्रिय नेता थे। स्वयं भगतसिंह भी आर्यसमाजी थे। वे अत्यंत प्रतिभाशाली और निडर युवक थे। वे सदाचारी और कट्टर देशभक्त थे। वे संध्या-हवन भी किया करते थे। भगत सिंह आर्यसमाज और कांग्रेस के महान नेता लाला लाजपत राय की हत्या का बदला लेना चाहते थे। उनकी हत्या करने वाले पुलिस अफसर जेम्स ए स्कहृट की बजाय भगत सिंह की पिस्तौल से दूसरा पुलिस अफसर जह्न सांडर्स मारा गया।

दिल्ली के चांदनी चौक में स्थित आर्यसमाज दीवान हाल में पं. रामचंद्र शर्मा 'महारथी' रहा करते थे। अब से लगभग ५० साल पहले उनसे जब मेरी भेंट हुई तो उन्होंने बताया कि भगतसिंह आकर उनके पास दीवान हाल में रहते थे और 'महारथी' पत्रिका के संपादन में सहयोग करते थे। अब से लगभग ६० साल पहले इंदौर के सेट बद्रीलाल भोलाराम ने मुझे बताया था कि भगतसिंह इंदौर के पारसी मोहल्ले के आर्य सामज में भेष बदलकर रुके थे। मेरी बेटी डॉ. अपर्णा वैदिक भगतसिंह और अन्य क्रांतिकारियों पर आजकल एक शोधग्रंथ लिख रही है। उसने लाहौर, दिल्ली और लंदन के संग्रहालयों के गुप्त दस्तावेज खंगाले हैं। उसने मुझे बताया कि उत्तर भारत के ज्यादातर क्रांतिकारी आर्यसमाजी ही थे।

भगतसिंह ने फांसी लगने के पहले जेल से जो पत्र और लेख लिखे, उनसे पता चलता है कि उन पर मार्क्स और अराज कतावाद का प्रभाव बढ़ता जा रहा था। उनके कुछ साथियों ने अंग्रेजों के लिए मुखबरी भी की थी लेकिन भगतसिंह की वीरता और बलिदान ने स्वाधीनता आंदोलन में नई जान फूंक दी थी। अब उनका स्मारक लाहौर में बनने से भारत-पाक सौहार्द बढ़ेगा, इसमें शक नहीं है।

दिल्ली की अदालत में शहीद भगत् सिंह का बयान

''समाज का वास्तविक पोषक मजदूर है। जनता का प्रभुत्व मजदूरों का अंतिम भाग्य है। इन बादशों और विश्वास के लिए, हम

हर उस कष्ट का स्वागत करेंगे जिसकी हमें सजा दी जायगी। हम अपनी तरुणाई को इसी क्रान्ति की वेदी पर होम करने लाये हैं, क्योंकि इतने गौरवशाली उद्देश्य के लिए कोई भी बलिदान बहुत बड़ा नहीं है।...

''समाज के सबसे आवश्यक तत्व होते हुए भी उत्पादन करने वालों या मजदूरों से, उनके शोषक उनकी मेहनत का फल लूट लेते हैं, और उनको प्रारंभिक अधिकार से भी वंचित कर देते हैं। एक ओर तो, सभी के लिए अनाज पैदा करने वाले किसानों के परिवार भूखों मरते हैं; सारे संसार के बाजारों को सूत जुटाने वाला जुलाहा अपना और अपने वच्चों का तन ढकने के लिए भी पूरा कपड़ा नहीं जुटा पाता; शानदार महल खड़े करने वाले राज, लुहार और बढ़ई झोपड़ियों में ही बसर करते और मर जाते हैं। और दूसरी ओर, पूंजीपति, शोपक...अपनी सनकों पर ही करोड़ों वहा देते हैं।...

''क्रान्ति से हमारा अर्थ है-अंत में समाज की एक ऐसी व्यवस्था की स्थापना, जिसमें इस प्रकार के हड़कम्प का भय न हो, और जिसमें मजदूर वर्ग के प्रभुत्व को मान्यता दी जाय और उसके फलस्वरूप विश्व संघ पूंजीवाद के बंधनों, दुखों तथा युद्धों की मुसीबतों से मानवता का उद्धार कर सके।''

నేడు సంపూర్ణ ప్రజాస్వామ్యదినం

రాజులు బూజులు.. మిలిటరీ తుపాకుల పాలన, బ్యూరోక్రాట్ల పారపాలన అంతమై ఎవరి పెత్తనం. ప్రమేయం లేని స్వేచ్ఛాయుత హైదరాబాద్ రాష్ట్రం ఆవిష్కారమైన రోజు.. 1952 మార్చి 6. బ్రిటిషిండియాలో స్వాతంత్ర్యానికి ముందే ప్రజలు ఓట్లు వేసి ప్రభుత్వాలను ఎన్నుకున్నా.. నిజాం సంస్థానంలో మాత్రం ప్రజలు తొలిసారి ఓట్లు వేసింది.. ప్రభుత్వాన్ని ఎన్నుకున్నదీ 1952లోనే.. అందుకే ఈ రోజును సంపూర్ణ ప్రజాస్వామ్యదినంగా హైదరాబాద్ ప్రజలు పిలుచుకుంటున్నారు.

- చరిత్రకెక్కని తెలంగాణ స్వేచ్ఛాసంకేతం
- తొలిసారి ప్రజలు ఓట్లు వేసి ప్రభుత్వాన్ని ఏర్పరుచుకున్న రోజు
- 1952 మార్చి 6 -హైదరాబాద్ రాష్ట్రంలో తొలి ప్రజాప్రభుత్వం అధికారం చేపట్టిన రోజు

సవాల్‌రెడ్డి

సుమారు 300 సంవత్సరాల క్రితం కొన్ని మహారాష్ట్ర ప్రాంతాలు, కొన్ని కన్నడ ప్రాంతాలు మరి కొన్ని తెలుగు ప్రాంతాలను కైవసం చేసుకుని అసఫ్‌జాహీ వంశీయుడు చివరు మొఘల్ దర్బారునుంచి విడిపోయి స్వాతంత్ర్యం ప్రకటించుకోగా హైదరాబాద్ సంస్థానం ఏర్పడింది. సుదీర్ఘ పాలన తర్వాత 1948లో పోలీసు చర్య అనంతరం భారత దేశంలో పార్ట్ బీ రాష్ట్రంగా కలిసిపోయింది. నిజాం లొంగుబాటు అనంతరం సంస్థాన ప్రభుత్వాన్ని రద్దు చేశారు. నిజాం నామమాత్ర అధిపతిగా మారారు. సంస్థానాధీశుడుగా నిజాంను హోదాను కొనసాగిస్తూ పాలనా బాధ్యతలను నిర్వహించేందుకు ఓబర్ ప్రధానను ప్రధాన పరిపాలనాధికారిగా నియమించారు. ఎట్ పాత్రోను ఇన్‌స్పెక్టర్ జనరల్‌గా నియమించడంతో పాటు అన్ని జిల్లాలకు కొత్త కలెక్టర్లు, ఎస్పీలను నియమించారు. సెప్టెంబర్ 18వ తేదీన మేజర్ జనరల్ జే ఎన్ చౌదరిని మిలిటరీ గవర్నర్‌గా నియమించారు. దీనితో సంస్థానంలో సైనిక పాలన ప్రారంభమైంది. లేక్‌వ్యూ గెస్ట్‌హౌస్ ఆయన కార్యాలయం. గోల్కొండ ఆయుధాగారం. ఈ సందర్భంగా ప్రధాని జవహర్లాల్ ఒక ప్రకటన చేస్తూ శాంతిభద్రతలు నెలకొన్న తర్వాత సంస్థాన భవిష్యత్తును సంస్థాన ప్రజలే నిర్ణయించుకునేందుకు ప్రజలకు సంపూర్ణమైన స్వాతంత్ర్యం ఇవ్వబడుతుందని ప్రకటించారు. దాన్ని బట్టి హైదరాబాద్‌కు ఒక ప్రజా పరిషత్తు ఏర్పాటు చేసి అనంతరం భవిష్యత్తు నిర్ణయిస్తారని అంతా భావించారు. అదే రకమైన హామీని సర్దార్ పటేల్ కూడా ఇచ్చారు. ఈ నేపథ్యంలో భారత సంస్థాన శాఖ కార్యదర్శి మీనన్ హైదరాబాద్ పర్యటన జరిపారు. ఇటు నిజాంతో అటు చౌదరి ఇతర అధికారులతో చర్చించిన తర్వాత మిలిటరీ పాలన ఆరునెలలు మాత్రమే కొనసాగుతుందని వెల్లడించారు. కొద్ది మార్పులతో సంస్థానానికి పాలనా

హైదరాబాద్ రాష్ట్ర తొలి ముఖ్యమంత్రిగా బూర్గుల రామకృష్ణారావుతో ప్రమాణం చేయిస్తున్న నాటి రాజ్‌ప్రముఖ్ నిజాం ఉస్మాన్ అలీఖాన్

వ్యవస్థను ప్రకటించారు. ప్రధాన పరిపాలనాధికారిగా డీ ఎస్ బాక్లేను కేంద్రం పంపింది. ప్రధాన్ సహాయ పరిపాలనాధికారిగా నియమితులయ్యారు. రజాకార్ సంస్థను, ఆంధ్రమహాసభకు చెందిన కమ్యూనిస్టు పార్టీ, ఆంధ్ర కమ్యూనిస్టు పార్టీలను నిషేధించారు. దేశంలోని వివిధ ప్రాంతాలనుంచి సంస్థానానికి వచ్చిన వారిని వారివారి ప్రాంతాలకు పంపించి వేశారు. నిజాం సైన్యంలోని అరబ్‌లు, పఠాన్‌లను ఆయా దేశాలకు పంపించే ఏర్పాటు చేశారు. ఆనాడు భారతదేశంలో సుమారు 500 సంస్థానాలు విలీనమవుతున్నాయి. ఆయా చోట్ల కాంగ్రెస్ ప్రభుత్వాలను కేంద్రం నామినేట్ చేసింది. అదే రీతిలో సంస్థానంలో ప్రభుత్వం చేపట్టాలన్న ఆసక్తిని సంస్థాన కాంగ్రెస్ వ్యక్తీకరించినా ఢిల్లీ అంగీకరించలేదు. కమ్యూనిస్టులు, రజాకార్ల ప్రాబల్యం పూర్తిగా తొలగిపోయేదాకా ఆ ప్రసక్తే లేదని నాటి హోంమంత్రి సర్దార్ పటేల్ సంస్థాన కాంగ్రెస్ అధ్యక్షుడు రామానంద తీర్థకు స్పష్టం చేశారు.

ప్రమాణం అనంతరం నిజాంతో హైదరాబాద్ రాష్ట్ర తొలిమంత్రివర్గం గ్రూప్ ఫొటో

కొత్త పాలకుడు..

1949 డిసెంబర్ 1న కేంద్రం హైదరాబాద్‌లో మిలిటరీ ప్రభుత్వాన్ని రద్దు చేసింది. నూతన పాలకుడిగా ఎంకే వెల్లోడీ అనే ఉన్నతోద్యోగిని పంపింది. ఆయనను సంస్థాన ప్రధాన మంత్రి(ముఖ్యమంత్రి)గా నియమిస్తూ నిజాం ఫర్మానా జారీ చేశారు. డీఎస్ బాక్లే, నవాబ్ యార్‌జంగ్, రాజా ధోండీ రాజ్,ఎం. శేషాద్రి, ఏవీఎస్ రావు, సీహెచ్ కృష్ణారావు మంత్రి వర్గ సభ్యులుగా నియమితులయ్యారు.

భారత రిపబ్లిక్ అవతరణ..

1950 జనవరి 26న దేశంలో నూతన రాజ్యాంగం అమలులోకి వచ్చింది. భారత్ రిపబ్లిక్‌గా మారింది. సంస్థానాలన్నీ రాష్ట్రాలుగా మారాయి. ఈ నేపథ్యంలో హైదరాబాద్ పాలకుడుగా ఉన్న నిజాంను రాజ్ ప్రముఖ్‌గా భారత ప్రభుత్వం నియమించింది. సాంకేతికంగా అప్పటిదాకా నిజామే రాష్ట్ర పాలకుడు.ప్రతి ఉత్తర్వు నిజాం ఫర్మానా రూపంలోనే వెలువడేది. పబ్లిక్ గార్డెన్‌లోని జూబ్లీ హాలులో నిజాం రాజ్‌ప్రముఖ్ పదవీస్వీకారం జరిగింది. "మీర్ ఉస్మాన్ అలీఖాన్ నిజాం అనే నేను హైదరాబాద్ రాజ్‌ప్రముఖ్‌గా విశ్వాసయుతుడనై నా కర్తవ్యములను పరిపాలించగలనని ఇందుమూలంగా ప్రకటిస్తున్నాను. రాజ్యాంగమును న్యాయ చట్టములను శక్తివంచన లేకుండా సంరక్షిస్తానని హైదరాబాద్ ప్రజల శ్రేయస్సుకు సేవకు జీవితాన్ని అంకితం చేస్తానని ప్రమాణం చేస్తున్నాను" అని ఆయన ప్రకటించారు. రాజ్‌ప్రముఖ్ హోదాలో నిజాం భారత రిపబ్లిక్ ప్రకటనను కూడా చదివారు. నూతన రాజ్యాంగం మేరకు 1950 జూన్ 12న పౌరపాలకుడిగా ఉన్న వెల్లోడీని భారత ప్రభుత్వం ముఖ్యమంత్రిగా నామినేట్ చేసింది. కాంగ్రెస్ నాయకులు బూర్గుల రామకృష్ణారావు, వల్లూరి బసవరాజు, వినాయకరావు విద్యాలంకార్, పూల్ చంద్ గాంధీలను మంత్రులుగా నియమించింది.

హైదరాబాద్ ఎన్నికల కథ..

సైనిక చర్య జరిగేనాటికి హైదరాబాద్ సంస్థానానికి ఒక శాసనసభ ఉండేది. అయితే అది ప్రజలు ఎన్నుకున్నది కాదు. ఉన్నతాధికారులు, నిజాం ఎంపిక చేసిన కులీనులు, న్యాయవాదులు, వ్యాపారులు, విద్యావంతులు ఇందులో ఉండేవారు. సైనికచర్య అనంతరం 1948 డిసెంబర్ 7న హైదరాబాద్ పాతశాసనసభను రద్దు చేస్తూ నిజాం ఫర్మానా జారీ చేశారు. సంస్థానానికి నూతన రాజ్యాంగం తయారు చేసేందుకు రాజ్యాంగపరిషత్తు ఏర్పాటు చేయాలని ఆదేశించారు. "హైదరాబాద్ రాజ్యాంగాన్ని తయారుచేసేందుకు రాజ్యాంగ పరిషత్తు నిర్మాణానికి ప్రథమ చర్యగా ఓటర్ల జాబితాలు తయారు కావలెనని ప్రభుత్వం నిర్ణయించింది. కాబట్టి ఓటర్ల జాబితాల తయారు చర్యలతో సంస్థాన ప్రజలు, ప్రభుత్వోద్యోగులు అందరూ పూర్తిగా సహకరించాలని కోరుతున్నాను" అని ఆ ఫర్మానాలో పేర్కొన్నారు. డిసెంబర్ చివరినాటికి ఆ కార్యక్రమం దాదాపు పూర్తయింది. అందులో 5వేల మంది పటేల్,పట్వారీలు, 560మంది టస్కర్లు పాల్గొన్నారు. 1949 జనవరి 1 నాటికి 21 సంవత్సరాలు వయసు కలిగిన వారందరికీ ఓటు హక్కు ఇచ్చారు. వరుసగా 5 సంవత్సరాలు సంస్థానంలో నివసించి ఉండాలని, 1947లో కనీసం 180రోజులు ఏదో ఒక గ్రామంలో స్థిరంగా ఉండి ఉండాలని నిబంధన పెట్టారు. జైలు శిక్షలు పడ్డవారికి, మతి స్థిమితం లేని వారికి ఓటు నిరాకరించారు.

అయితే ఆ తర్వాత రాజ్యాంగ పరిషత్ ప్రతిపాదన పక్కకు పోయింది. దేశంలో నూతన రాజ్యాంగం అమలులోకి వచ్చి హైదరాబాద్ భారత్‌లో ఒక రాష్ట్రంగా మారిపోగా నిజాం సంస్థాన పాలకుడి హోదానుంచి.. హైదరాబాద్ రాజ్ ప్రముఖ్‌గా మారిపోయారు. దేశవ్యాప్తంగా పార్లమెంటు అసెంబ్లీలకు ఎన్నికలు ప్రకటించారు. అందులో భాగంగా హైదరాబాద్‌లో రాష్ట్ర శాసనసభ, పార్లమెంటు ఎన్నికల ప్రక్రియ ప్రారంభమైంది.

రాష్ట్రంలో 90,42,244 మంది ఓటర్లు తమ పేర్లను నమోదు చేసుకున్నారు. రాష్ట్ర శాసనసభ సభ్యుల సంఖ్యను 175గా నిర్ధారించారు. వీరి ఎన్నికకోసం 142 నియోజక వర్గాలను ఏర్పాటు చేశారు. ఇందులో 109 ఏకసభ్య నియోజకవర్గాలు కాగా 33 ద్విసభ్య నియోజకవర్గాలు(ఇక్కడ ఓటరు ఒక జనరల్ అభ్యర్థిని, ఒక రిజర్వ్‌డ్ అభ్యర్థికి ఎన్నుకోవలసి ఉంటుంది). రాష్ట్రంనుంచి 25 పార్లమెంటు స్థానాలను నిర్ధారించారు. దేశవ్యాప్తంగా 1951 అక్టోబర్‌లో ప్రారంభమైన ఎన్నికల ప్రక్రియ 1952 మార్చితో ముగిసింది. హైదరాబాద్ రాష్ట్రంలో డిసెంబర్‌లో ఎన్నిక ప్రక్రియ ప్రారంభమైంది. శాసనసభకు 584మంది, పార్లమెంటుకు 70మంది పోటీచేశారు. ఏడు జాతీయపార్టీలు, ఏడు ప్రాంతీయ పార్టీలు పోటీ చేశాయి. కాంగ్రెస్ 173 స్థానాల్లో అభ్యర్థులను నిలిపింది. కమ్యూనిస్టు పార్టీ మీద నిషేధం ఉండేది. అందువల్ల ఆ పార్టీ మరి కొన్ని పార్టీలను కలుపుకుని పీపుల్స్ డెమోక్రటిక్ ఫ్రంట్‌గా ఏర్పడి 77 స్థానాల్లో పోటీకి దిగింది. సోషలిస్టులు 97 స్థానాల్లో పోటీ చేశారు. ఎన్నికల్లో 52,02,214 ఓట్లు (42.94శాతం) నమోదయ్యాయి.

ఫలితాలు...

25 పార్లమెంటు స్థానాల్లో కాంగ్రెస్‌కు 14 , ఫ్రంట్‌కు 7 స్థానాలు లభించాయి. సోషలిస్టు పార్టీ, పీజెంట్స్ అండ్ వర్కర్స్‌పార్టీ, షెడ్యూల్ కాస్ట్ ఫెడరేషన్‌కు ఒక్కో స్థానం లభించగా ఒక స్థానంలో స్వతంత్రుడు గెలుపొందారు.

ఇక శాసనసభల్లో కాంగ్రెస్ 93 స్థానాలు గెలుచుకుంది. పీడీఎఫ్ 42 స్థానాలు, షెడ్యూల్డ్ కాస్ట్ ఫెడరేషన్ 5, సోషలిస్ట్ పార్టీ 11, పీజెంట్స్ అండ్ వర్కర్స్ పార్టీ 10 స్థానాల్లో విజయం సాధించాయి. 14మంది స్వతంత్రులు ఎన్నికయ్యారు. వీరిలో అత్యధికులు కాంగ్రెస్ తిరుగుబాటు అభ్యర్థులే. ఎన్నికలు కాగానే ఆరుగురు పార్టీలో చేరటంతో కాంగ్రెస్ బలం 99కి చేరింది. ప్రాంతాల వారీగా తెలంగాణలో కాంగ్రెస్ 88 స్థానాలకు పోటీ చేసి 38 స్థానాల్లో మాత్రమే గెలిచింది. మరాఠ్వాడాలో 28 స్థానాలు, కర్ణాటక ప్రాంతంలో 29 స్థానాలు లభించాయి. పీడీఎఫ్ తెలంగాణలో 36, మరాఠ్వాడాలో 8 స్థానాలు గెలుచుకోగా కర్ణాటకలో ఒక్క స్థానాన్ని గెలువలేదు. కాంగ్రెస్ తరపున పోటీ చేసిన జనార్దనరావు దేశాయ్, మాడపాటి హనుమంతరావు, మాడపాటిరామచంద్రరావు, జమలాపురం కేశవరావు ఓటమి పాలయ్యారు. పీడీఎఫ్ ప్రముఖుల్లో మగ్దుం మొహినుద్దీన్ (హైదరాబాద్‌లో మాసుమా బేగం చేతిలో ఓడిపోయారు. ఆ వెంటనే జరిగిన హుజూర్‌నగర్ ఉప ఎన్నికలో గెలిచారు), సోషలిస్ట్ నాయకుడు మహదేవ్‌సింగ్ ఉన్నారు.

కొలువుతీరిన కొత్త ప్రభుత్వం..

మార్చి 4 వ తేదీన నూతన మంత్రివర్గం ఏర్పాటుచేయవలసిందిగా కోరుతూ రాజ్‌ప్రముఖ్ నిజాం కాంగ్రెస్ పక్షనేత బూర్గుల రామకృష్ణారావుకు లేఖ పంపించారు. మార్చి 6 వ తేదీన మంత్రివర్గ జాబితాతో నిజాంను ఆయన అధికారిక భవనంలో బూర్గుల కలిశారు. అదే రోజు సాయంత్రం పబ్లిక్ గార్డెన్‌లోని జూబ్లీహాలులో బూర్గుల మరో 12మంది మంత్రులు ప్రమాణం చేశారు. నిరాడంబరంగా అరగంటలో ఈ కార్యక్రమం ముగిసింది. బూర్గులతో పాటు కొండా వెంకటరంగారెడ్డి, డీజీ బిందూ, వినాయక్‌రావు విద్యాలంకార్, డాక్టర్ జీఎస్ మేల్కోటే, నవాబ్ మెహిదీనవాజ్ జంగ్, డీ. పూల్‌చంద్, వల్లూరి బసవరాజు, డాక్టర్ మర్రి చెన్నారెడ్డి, అన్నారావ్, జగన్నాథరావు, శంకర్ దేవ్, దేవీసింగ్ చౌహాన్‌లు ప్రమాణం చేశారు.

బూర్గుల ప్రసంగం..

ప్రమాణం తర్వాత అదే రోజు రాత్రి హైదరాబాద్ రేడియోలో ముఖ్యమంత్రి బూర్గుల రామకృష్ణారావు ప్రజలనుద్దేశించి ప్రసంగించారు. " హైదరాబాద్ సంస్థానంలో వివిధ భాషల వారున్నప్పటికీ ప్రజలు తరతరాలుగా రాజకీయ సమైక్యభావాన్నేకాక ఏక సంస్కృతికి చెందిన వారమనే భావాన్ని కూడా పెంచుకున్నారు. హైదరాబాద్ సంస్థానం స్వతంత్ర ప్రజాస్వామిక భారత సమాఖ్యలో పరిపాలనరీత్యా చాలావరకు స్వయం నిర్ణయాధికారంకల భాగంగా ఉండాలని సంస్థాన ప్రజల అభిప్రాయం. రాజకీయంగా కానీ, రాజ్యాంగరీత్యాగాని భావి పరిపాలన విధానాన్ని తాము కోరిన విధంగా నిర్ణయించుకోవడానికి ప్రజలకు స్వాతంత్ర్య మున్నప్పటికీ వారి నిర్ణయం ఇండియన్ యూనియన్ సమిష్టి రాజకీయాభివృద్ధికి అనురూపంగా రాజ్యాంగానికి అనువుగా ఉండాలి. తరతరాలుగా వివిధ మతవర్గాల ఐకమత్యంగల హైదరాబాద్ ప్రజలు ఈ విషయంలో తక్కిన భారత ప్రాంతాలకు మార్గదర్శకులు కాగలరు. ఇటీవల పెచ్చుపెరిగిన కుల, మత తత్వాన్ని, భాషా విద్వేషాన్ని ఎదుర్కోవాలని ప్రజలను అభ్యర్థిస్తున్నాను. ప్రభుత్వం పూనుకున్న భూమి సంస్కరణలు మున్ముందు ఆర్థిక చర్యలకు ఇకమీద అమలు జరుపదలిచిన చర్యలకు ప్రజల సహకారం అవసరం. పెద్దపెద్ద భూములున్న భూస్వాములు ముందంజ వేసి భూములు లేని ప్రజలకు భూములు పంచి పెట్టడం కోసం తమ భూములను బుద్ధిపూర్వకంగా ప్రభుత్వానికి అప్పగించాలని కోరుతున్నాను" అని విజ్ఞప్తి చేశారు.

పదవినుంచి విరమణ చేస్తున్న వెల్లోడీ కూడా రేడియోలో ప్రసంగించారు. పోలీసు చర్య కాలంనుంచి జరిగిన పరిణామాలనువివరించారు. తమ ప్రభుత్వ కాలంలో జాగీర్దారీ విధానం రద్దు చేశామని, ఆ జాగీర్లను దివానీ భూముల్లో కలిపివేశామని వివరించారు. తర్వాత వెల్లోడీనే రాష్ట్ర ప్రభుత్వానికి కేంద్రం తరపున సలహాదారుగా నియమితులయ్యారు.

తొలి అసెంబ్లీ సమావేశం..

మార్చి 23న అసెంబ్లీ తొలిసారి సమావేశమైంది. నిజాం రాజ్‌ప్రముఖ్ హోదాలో ప్రారంభోపన్యాసం ఇచ్చారు. సుమారు అరగంట పాటు ప్రసంగిస్తూ సంస్థానంలో సంపూర్ణ ప్రజాస్వామ్య ప్రభుత్వం ఏర్పడినందుకు సంతోషం వ్యక్తం చేశారు. నెహ్రూ, పటేల్‌కే ఈ ఘనత దక్కుతుందని అన్నారు. సంస్థాన చరిత్ర పరిణామక్రమాలను ఆయన వివరించారు. మారేకాలంతో కలిసి ప్రయాణం సాగించాలని అన్నారు. "సంస్థాన చరిత్రలో ఇది సువర్ణాక్షరాలతో లిఖించదగిన రోజు. పాత అధ్యాయం ముగిసి కొత్త అధ్యాయం ప్రారంభమవుతున్నది. రాచరిక హోదాతో పాలించిన నేను ఇవాళ భారత రిపబ్లిక్ యొక్క లౌకిక రాజ్యాంగం కింద రాజప్రముఖ్‌గా ప్రసంగించగలుగడం ఒక మహాభాగ్యంగా భావిస్తున్నాను. విశాల దేశంలో ఒంటరి మనస్తత్వం పనికిరాదు. దేశం సమిష్టి ప్రయోజనాలు దృష్టిలో పెట్టుకోవడం మన అందరి కర్తవ్యం. లౌకిక భావన భారత రాజ్యాంగ సిద్ధాంతాల్లో ఒకటిగా ఉంటున్నది. దాన్ని ఆచరణలో పెట్టాలి. హైదరాబాద్‌కు ఆ విశిష్టత ఉంది. ఇక్కడి మతసామరస్యభావన తక్కిన దేశానికి ఆదర్శప్రాయమైంది. ఈ సంప్రదాయం చిరకాలం వర్ధిల్లాలి." అని నిజాం తన సందేశాన్ని ఇచ్చారు.

నైజాం అకృత్యాయాలకు, అన్యాయాలకు, దోపిడి-దౌర్జన్యాలకు వ్యతిరేకంగా హోరా-హోరిగా 1930 నుండి 1948 వరకు ప్రజలు పక్షాన నిలబడి పోరాటం చేసిన ప్రముఖమైన సంస్థ ఆర్య సమాజమును పై లేఖలో ఉదహరించక పోవడం లేఖకుల ఏకదృపథము అని చెప్పవచ్చును. పోరాటంలో ఆర్య సమాజము అగ్రగామిగా ఉన్నందుకే నల్లురితో ఏర్పడిన మొదటి ప్రభుత్వంలో మంత్రిగా ప్రమాణం స్వీకారం చేసిన ఆర్య సమాజ నాయకుడు పండిత్ వినాయక రావు విద్యాలంకార్ గారు ఫోటోలో ఉండటమే దీనికి నిదర్శనము. బుర్గుల రామకృష్ణా రావు గారి కుడివైపున ఉండే వ్యక్తి పండిత వినాయక రావు విద్యాలంకార్.

SHUDDHI WORK OF THE ARYA SAMAJ

- Lala Lajpat Rai

"If we have sinned against the man who loves us, have ever wronged a brother, friend or comrade, have ever done an injury to the neighbor who ever dwelt With us, or even to a stranger, O Lord! Free us from the guilt to this trespass." -R.V., 85, 7.

I. Reclamation and Conversion

Literally, Shuddhi means purification, but when used by Arya Samajists it includes also reclamation and conversion. The Arya Samaj, being a Vedic church, and as such a Hindu organization, engages in the work of reclaiming those who have left Hindu society, and it converts everyone who is prepared to accept its religious teachings. In this work it comes into direct conflict with the proselytizing work of the Musulman Mullah and the Christian missionary; the Musulman fanatic and the Christian zealot hate it, but even the sober-minded moulvie and the broad-minded Christian do not like it. Yet it has met with considerable success in reclaiming Hindus converted to other faiths, and in stemming the tide of conversion. But its greatest success lies in raising the social status of the depressed classes among the Hindus and preventing them from leaving Hinduism and joining other religious denominations. About the reconversions the Census Commissioner of the United Provinces of Agra and Oude remarks :" Special efforts are directed to the reconversion of converts from Hinduism to Christianity or Islam, while persons who are Christian or Mahomedan by birth are also occasionally converted." of such Mahomedan converts I have myself known at least one case, and others have occurred. There is a society affiliated to the Arya Samaj , which is known as the Rajput Shuddhi Sabha, which has as its chief object the reconversion of Mahomedan Rajputs to Hinduism via the Arya Samaj. On a single day 370 such Rajputs were converted to Aryaism. In three years, between 1907. and 1910, this society claims to have converted 1,052 Musulman Rajputs."

2. Ceremony of Conversion

Another Census Commissioner of the same province (Mr. Burn, I.C.S.) says that "the ceremony of conversion is simple. The would-be Arya lives on milk alone for a period of fifteen days/ this being known as the Chandrain birt. The admission into the Samaj is made the occasion of a public meeting, at which the convert declares his adherence to the ten principles of the Samaj, a great homa sacrifice is performed, passages from the Vedas are recited, and the convert distributes sweetmeats to those present. "^ In some cases a certificate of Shuddhi is issued, which facilitates social intercourse with Hindus.

3. Depressed Classes

But the greatest interest is being taken in the social uplifting of the lower castes; this reclamation is taking two distinct lines : (i) the raising of the Status of castes not entitled to wear the sacred thread, by admitting them to that privilege; and (2) raising the untouchables to the rank of touchable, and educating them to higher social ideals, with a view to eventually raising them to social equality with other Hindus. This work is done by the Arya Samaj es as such, as well as by special organizations supported by the Arya Samaj and affiliated, directly or indirectly, to the latter. Two years ago the author delivered a speech on this subject as President of a large Conference, at the anniversary of the Gurukula at Hardwar, and discussed the question from three standpoints : from the point of view of the Hindu community; as a question of all Indian importance; and in its humanitarian bearing. Discussing it from the all- India point of view, he said :" It is to be remembered that national define has its origin in the oppression of others, and if we Indians desire to achieve national self-respect and dignity, we should open our arms to our unfortunate brothers and sisters of the depressed classes and help to build up in them the vital spirit of human dignity. So long as we have l these large classes of the untouchables in this country we can make no real progress in our national affairs, for this requires a high moral standard; and this is unthinkable where the weaker classes are unfairly treated. No man may build his greatness on

his brother's weakness; man shall stand or fall by his Own strength."

As recently as December last the author again discussed the subject, as the President of another large Conference of the same nature at Karachi (Sindh).

In the course of this speech he remarked that" the cause of the depressed classes combines in it the best of religion, the best of humanity, and the best of nationalism ; that it is a cause worthy of the best energies and the most strenuous efforts of a large number of India's daughters and sons, such as believe that 'Life is a mission and duty its highest Law,' and that the best fulfillment of that duty lies in the service and uplifting of those whom human tyranny and prejudices have put out of the pale of humanity, and who are unfortunately the victims of the idea that they deserve no better fate."

"In my opinion," continued the speaker, "no greater wrong can be done to a human being endowed with intellect than to put him into circumstances Which make him believe that he is eternally doomed to a life of ignorance, servitude, and misery, and that in him any sort of ambition for his betterment is a sin.

"No slavery is more harmful than that of mind, and no sin is greater than to keep human beings in perpetual bondage. It is bad enough to enslave people, but to create and perpetuate circumstances which prevent them from breaking their chains and becoming free, is infamous. No man or number of men has a right to do this, and they deserve the severest condemnation of all who have a conscience. It is my firm conviction that injustice and oppression of fellow-men, the attempt to stifle legitimate human ambition, the desire to keep people down in order to profit by their misfortune, is sure to react on the authors and agents thereof, and that nothing can save them from a similar fate sooner or later except a timely consciousness of the gravity of their sin and a vigorous attempt to atone for it by undoing the mischief wrought.

"I am a Hindu and a firm behever in the doctrine of Karma. I also behave that every man makes his own Karma, and is thus the arbiter of his own destiny. I therefore look at the question thus: the ancestors of the Hindus (or perhaps they themselves in their previous existence), in the insolence of wealth and power maltreated people whom God had placed under them to protect and bless. The degradation of the latter reacted upon them and reduced them to the subordinate position which has been their lot for so many centuries, without in any way benefiting those who had already been degraded by them. This double degradation has resulted in the loss of the manly instincts of the race; and we find that, despite a strong and sincere desire to improve, we feel as if the wheels of progress are kept back by forces beyond our control. The highest interests of the nation therefore require that the best in us should be devoted to the undoing of the mischief wrought by us or our ancestors. We owe a heavy debt to those depressed classes; that debt must be paid, and paid as soon as possible. No amount of paper resolutions and no amount of talking on platforms will make us men unless we adopt the first principle of manhood, viz., of making the amended honorable to those of our own people whom we have wronged and whom we continue to wrong under an entirely mistaken idea of our dignity and social position. Living in the midst of large classes of people not conscious of their manhood, we cannot hope to progress towards a better type; a man Having in an atmosphere of infectious disease has to keep up constant war lest the germs of disease get admittance into his body and destroy it. At the best, action in such circumstances can only be preventive and not operative: our work for ourselves can only be negative and not affirmative. Even if we succeed in avoiding infection, that does not mean much, as our time is spent in preventive measures without making advance. We have, therefore, to realize that the best and highest sacrifices we may put forth for our national advancement cannot come to much as long as the depressed classes remain what they are. The question then, is one of national importance, and one which deserves to be placed almost at the head of the list of reforms needed to bring about our social efficiency. It is not a question of charity or goodwill but one of National self-preservation. I have so far looked at it from humane and national points of view, but there is another aspect which Hindus cannot ignore. The depressed classes or the vast bulk of them, are Hindus; they worship Hindu gods, observe Hindu custom, and follow the Hindu law. A great many of them worship the cow and obey their Brahman priests. They have no desire to go out of Hinduism unless it be impossible for them otherwise to better their position reugiously,

socially, and Economically. Nay, they cling to Hinduism in spite of the knowledge that by giving it up and adopting other faiths they have an immediate prospect of Rising both socially and economically. There are agencies prepared to receive them with open arms if only they give up their ancestral faith, of which they Know little, and whose priests care so little for them. Indications are not wanting that many of them have already become conscious of the wretched position they hold in Hindu society. Some have begun to resent it, and it will be no wonder if large numbers of them leave Hindu society with thoughts of retaliation and revenge. Hindu society is in a state of transition, and is throwing off the accretions that have gathered round it in times of stress and trouble. With the advance of education and under modern influences, striking changes are taking place in the ideals and modes of life and thought of the society. The great majority of educated Hindus think that their progress, even on the most advanced modem lines, does not necessitate their giving up their religion or its forms, or even the mainsprings of their life as Hindus. If so, it is a question of paramount importance to Hindu society, that all those who call themselves Hindus should not only be properly educated, but that each member should have the consciousness that there is no position in society to which he cannot aspire if he is otherwise fitted for it by personal qualifications. No society can hold its own in these days of universal competition and education if it does not allow its members the fullest scope for progress. "Modern societies go further; they not only allow the fullest scope to their members but they have also to find opportunities tor progress. According to sound social conceptions, there cannot be much hope for a society which keeps a fourth of its total strength in perpetual bondage, doomed to dirty work, insanitary life, and intellectual starvation, and denies them opportunities of association with other members of the community. I am not prepared to admit that such a state of things forms an essential feature of Hinduism; it is enough to shame us that it should be associated with present day Hinduism.

Happily there is some awakening among the leaders of orthodox Hinduism also. The famous Gait Circular proved a good tonic for the apathy of orthodox Kashi. One fine morning the learned pandits of Kashi rose to learn that their orthodoxy stood the chance of losing the allegiance of six cores of human beings who, the Government and its advisers were told, were not Hindus, in so far as other Hindus would not acknowledge them as such, and would not even touch them. The ways of Providence are strange and inscrutable. The Gait Circular had a quite unexpected effect and galvanized the dying body of orthodox Hinduism into sympathy with its untouchable population, because that was so necessary to avert its own downfall. The possibility of losing the untouchables has shaken the intelligent section of the Hindu community to its very depths, and were it not for long established prejudices and deep-rooted habits, the untouchableness would soon be a thing of the past. The danger having been removed of Hinduism being bereft of the depressed classes by the fiat of the Census Department, there is a chance of Hinduism reverting to its old apathy and indifference, and against this the leaders and well-wishers of the Hindu community have to guard. From the Hindu point of view too, then, the matter is of first-rate importance and cannot be ignored without serious loss to the body and soul of Hinduism. I would, therefore, appeal to every Hindu to be serious about it ; this is no time for trifling. The Christian missionary is gathering the harvest and no blame can attach to him for doing so. He is in this country with the message of His God, and if the Hindus forsake their own people, he, in any case, will not fail them. The depressed classes, as I have said, have no desire to leave Hinduism, if the latter make it possible for them to progress on humane lines; but if in its stupidity it hesitates and hesitates, they are not willing to follow in its train any longer."

The following extract gives an account of what has so far been done by the Arya Samaj in this connection :

"... In the Punjab and the United Provinces substantial work is being done by the Arya Samaj. In my eyes the chief merit of this work Hes in forcing or persuading Hindu society to assimilate these classes and raise them to a respectable position in the social scale. From that point of view the methods of the Arya Samaj are much more effective than those adopted in other parts of India. The Arya SamajISTS occupy an admittedly good position in Hindu society. The orthodox party often threatens to outcaste them, but

eventually find that it is not in their power to do so. In fact they cannot afford to lose them: Hinduism in Northern India cannot be thought of without the Arya Samaj. It is not only a source of strength to Hinduism and Hindus, but is the Principal effective agency, always and everywhere present, to defend them, to save them, and to serve them. It is the Arya Samajists who open and maintain schools, colleges, Vidyalas, and Gurukulas for the education of their boys and girls ; it is they who fight their religion.- and denominational battles, who defend their Shastras, who serve them in times of famine or distress, who look after their womanhood, and who spend money, time, and energy in reclaiming those who would otherwise be lost to them. The orthodox are angry with the Arya Samaj on account of their audacity in admitting some of the depressed classes and untouchables into Hindu society. They threaten to excommunicate and in some cases they carry out their threats, but eventually find it is useless to break their heads against rocks. In their despair, they pour out the vials of their wrath upon the untouchables and persecute them, but at this stage the law steps in and they have to submit to the inevitable.

"The Arya Samajists reclaim these depressed classes by admitting them to the privileges of the Dwijas. They administer Gayatri to a select number, invest them with the sacred thread, confer on them the privilege of performing Homa, and start inter-dining and in a few cases even inter-marriage with them. This startles the Hindus. The whole country where such a thing is done for the first time is thrown into convulsions. People begin to think and talk. Occasionally they resort to violence which in some cases leads to litigation, but eventually truth, justice and perseverance triumph. In the territories of the Maharaja of Jammu and Kashmir the whole strength of one of these castes (in one pargana), about 10,000 souls, has been admitted into the Arya Samaj. This is the result of about three years' work. The agitation is now subsiding and things are resuming their normal condition. In another district (Sialkote) over 36,000 of another caste have been similarly raised. A special organization has been formed to look after their education, etc., called the Megh Udhar Sabha (a society for the uplift of Meghs), which maintains a Central School and several primary schools. The Central School has a splendid building of its own, the foundation stone of which was laid by the Collector of the District, and on which they have spent some forty thousand rupees. In Another district (Gurdaspur) Pandit Ram Bhaj Dat has reclaimed several thousands within the last two years. The orthodox party is still agitated there, and no organization has yet been formed to look after those reclaimed. In another district (Hoshiarpur), thousands have been reclaimed and there is a regular organization looking after their educational and other needs. In Lahore itself good work is being done among Hindu sweepers and Chamars. In July, I purchased a large plot of land at Lahore on the other side of the Ravi, at a cost of Rs. 21,000, to build a Central Home and a Central School for the Depressed Classes Mission. We have used a portion of the balance of the famine fund, raised by me in 1908, towards the uplift of the depressed classes, and are maintaining some Primary Schools scattered over the province for the benefit of these classes. Some of these are receiving Government grants and others will soon earn them. The funds thus released will then be available for other schools. There is hardly a district in the province where some work in connection with the uplift of the depressed classes is not being done, though in most cases it only forms part of the general programmed of the Arya Samaj. But the best and most cheering part of this work is that in some places the orthodox party have become conscious of their duty towards the depressed classes and are in full sympathy with the Arya Samaj. At the last session of the Punjab Hindu Conference, at the suggestion of a Hindu Sadhu of the orthodox party, a resolution was unanimously passed to invite the depressed classes to send representatives to the Conference in future. In Lahore and some other places we find that high caste Hindus have no scruples in sending their children to the schools which we maintain mainly for the depressed classes.

The children mix quite freely and on equal terms. In the U.P., the home of Hindu Orthodoxy, the work is more difficult; but last year I succeeded in making a big hole in the orthodox fortress by reclaiming a number of Domes (one of the lowest untouchable castes in the U.P.) and admitting them into the Arya Samaj. I went to their house in the interior of the hills and along with a number of high caste Arya

विकासवाद का वैदिक सिद्धान्त

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

सृष्टि व मनुष्य की उत्पत्ति वैज्ञानिक जगत् के लिए कुतूहल का विषय रही है। चार्ल्स डार्विन के विकासवाद की परिकल्पना के पश्चात् इसके समर्थन तथा विरोध दोनों ही पक्षों में बहस चलती आ रही है। विकासवादी अवधारणा अमीबा से लेकर मनु य तक की श्रृंखला को क्रमिक विकास की देन मानती है, जिसमें विभिन्न प्रजातियों में परिस्थितियों के अनुकूल कुछ परिवर्तन आते रहकर उन्हीं से नयी-२ प्रजातियां उत्पन्न होती रहीं। इस प्रकार इस विचारधारा के अनुसार मनुष्य एवं अन्य पशु-पक्षियों, कीट-पतंगों, सभी के पूर्वज एक ही थे तथा आधुनिक बन्दर मनुष्य का सर्वाधिक निकट सम्बन्धी है। विभिन्न प्रजातियों में नाना अंगों का विकास सवयमेव आवश्यकता के अनुरूप होता रहा अर्थात् एक प्राणी दूसरे प्राणी में किसी विति के कारण बदलता रहा। इस विकासवाद के विरुद्ध भी अनेक विदेशी वैज्ञानिकों ने समय-२ पर अनेक सिद्धान्त दिए हैं। शारीरिक विकास, बौद्धिक विकास एवं भाषा के विकास, इन तीनों ही वि आयों पर विकासवाद के विरोधी विदेशी वैज्ञानिकों ने भी अनेक घम्भीर प्रश्न खड़े किये हैं, परन्तु विकासवादी कभी इन प्रश्नों का समुचित उत्तर नहीं दे पाते। इधर भारत में **महर्षि दयानन्द सरस्वती** एवं उनके फरवर्ती व अनुयायी अनेक विद्वानों ने विकासवाद की अवधारणा को मिथ्या सिद्ध किया है, पुनरपि डार्विन का विकासवाद आज भी कुछ पूर्वाग्रही वैज्ञानिकों के लिए आदर्श सिद्धान्त बना हुआ है।

अभी केन्द्रीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री **क्षीमान् डॉ. सत्यपालसिंह जी के वक्तव्य कि हम सभी मानव बन्दरों की नहीं, बल्कि मानव की ही सन्तान हैं, पर ये महानुभाव कोलाहल करते हुए उन पर चतुर्दिक् आक्रमण करने लगते हैं।** देश के वैज्ञानिक व वैज्ञानिक संस्थान भी सब एकजुट हो जाते हैं। मैंने भी इन सभी से सोशल मीडिया के माध्यम से अनेक प्रश्न पूछे थे परन्तु किसी भी प्रमाणित संस्था वा विद्वान् ने मेरे प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया बल्कि कुछ महानुभावों ने अनर्गल प्रलाप ही किया। इन महानुभावों को किसी भी देशी अथवा विदेशी वैज्ञानिक अथवा विचारक का यह कथन कदापि स्वीकार नहीं कि हम मनुष्य की ही सन्तान हैं ?

मेरे प्रश्नों के उत्तर में केवल मेरा सिद्धान्त जानने की इच्छा व्यक्त करने वाले महानुभावों के लिए मैं वैदिक विकासवाद पर अपने संक्षिप्त वि प्रस्तुत करता हूँ।

वस्तुतः **'विकासवाद'** शब्द पर विचार करें, तो यह शब्द अति उत्तम व सार्थक है, लेकिन डार्विन एवं उनके समर्थकों ने इस शब्द का समुचित अर्थ नहीं जाना और अपने अवैज्ञानिक मत को **'विकासवाद'** विशेषण से विभूषित करने का प्रयास किया। अगर हम सम्पूर्ण सृष्टि पर गम्भीरता से विचार करें, तो स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण सृष्टि एवं उसका प्रत्येक उत्पन्न पदार्थ विकास की सीढ़ियां चढ़ते-२ ही वर्तमान स्वरूप में आज दिखाई दे रहा है। बिना क्रमिक विकास के प्राणी जगत् की बात ही क्या करें, कोई लोक-लोकान्तर वा एक कण, फोटोन आदि भी कभी नहीं बन सकता। **वैदिक विज्ञान विकासवाद की विशद व्यख्या करता है परन्तु हमारा विकासवाद डार्विन का विकासवाद कदापि नहीं है। डार्विन का विकासवाद वस्तुतः विकासवाद नहीं है, बल्कि अनियन्त्रित व बुद्धिविहीन यदृच्छयावाद (मनमानापन) है,** जिसे भ्रमवश वैज्ञानिक विकासवाद नाम दिया जा रहा है।

वास्तव में **विकास का दुर्थ है, बीज से अंकुर, अंकुर से पौधा व उससे पुष्प, फल व पुनः बीज का उत्पन्न होना।** आज विज्ञान जिन्हें मूल कण मान रहा है, वे क्वार्क तथा फोटोन्स भी वास्तव में मूल पदार्थ नहीं है। वे भी सूक्ष्म रश्मियों को संघनित रूप हैं अर्थात् उन रश्मियों के नाना समुदायों के विकसित रूप हैं। जो String theorist इन कणों को सूक्ष्म Strings से निर्मित मानते हैं वे Strings भी मूल तत्व नहीं हैं, बल्कि वे वैदिक रश्मियों के संघनित व विकसित रूप हैं। Strings व कणों वा फोटोन्स के विकास से वर्तमान विज्ञान अनभिज्ञ है। जीवविज्ञानी जिस अमीबा को सबसे छोटी इकाई मानते हैं अथवा उसके अन्दर विद्यमान गुणसूत्र, जीन्स, D.N.A. आदि को सूक्ष्मतम पदार्थ मानते हैं, वे नहीं जानते कि **जहाँ उनका जीव विज्ञान समाप्त हो जाता है, वहाँ भौतिक विज्ञान प्रारम्भ होता है और जहाँ वर्तमान भौतिक विज्ञान समाप्त हो जाता है, बहाँ वैदिक भौतिक विज्ञान प्रारम्भ होता है और जहाँ वैदिक भौतिक विज्ञान की सीमा समाप्त हो जाती है, वहाँ वैदिक आध्यात्मिक विज्ञान प्रारम्भ होता है।** आज विडम्बना यह है कि वैदिक भौतिक विज्ञान एवं वैदिक आध्यात्मिक विज्ञान की नितान्त उपेक्षा करके वा उसका उपहास वा विरोध करके भौतिक विज्ञान एवं जीव विज्ञान आदि की समस्याओं का हल खोजने का प्रयास किया जा रहा है। यह भी एक दुःख सत्य है कि संसार को वैदिक भौतिक विज्ञान से अवगत कराने वाले भी कहाँ हैं ? इस कारण वर्तमान विज्ञान अनेक समस्याओं से ग्रस्त है तथा एक समस्या का समाधान करने का प्रयास करता है, तो अनेक नई समस्याओं को उत्पन्न भी कर लेता है। एक टैक्नोलॉजी का आविष्कार करता है, तो नाना दुष्प्रभावों को भी उत्पन्न कर लेता है, दवाओं के विकास के साथ रोगों का भी निरन्तर विकास हो रहा है, सुख-साधनों के विकास के साथ-२ अपराधों एवं पर्यावरम प्रदूषण को भी समृद्ध करता जा रहा है। इन सब समस्याओं का मूल कारण है, वर्तमान विज्ञान का अपूर्ण ज्ञान, जिसका कारण वैदिक ज्ञान की उपेक्षा ही है। अस्तु।

हम चर्चा कर रहे थे कि सृष्टि का प्रत्येक कथित मूलकण व फोटोन सूक्ष्म वैदिक रश्मियों के अति बुद्धिमत्तापूर्ण से बने हैं। वे रश्मियां मनस्तत्व एवं मनस्तत्व, काल व प्रति के संयोग से उत्पन्न होता है।

सबके पीछे सर्वनियन्त्रक, सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक, निराकार, सर्वज्ञ चेतन सत्ता ईश्वर की प्रेरणा है। सृष्टि के सवाधिक सूक्ष्म तत्व प्रकृति से लेकर वर्तमान मूलकणों तक की विकास यात्रा बड़ी लम्बी व व्यवस्थित वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसका वर्तमान भौतिक वैज्ञानिकों को विशेष भान नहीं है। मूलकणों एवं फोटोन की उत्पत्ति से लेकर तारे, ग्रह व उपग्रहों तक के निर्माण तक की विकास यात्रा की चर्चा यहाँ करना उचित नहीं। वैसे वर्तमान Cosmology, Particle Physics, Astrophysics, Quantum field theory, String theory जैसी विभिन्न शाखाएं इन विषयों की अपनी सीमा के अन्दर व्याख्या करती हैं। मेरा विषय भी इन्हीं पदार्थों पर गम्भीर प्रकाश डालना है। जीव विज्ञान के अन्दर व्याख्या करती हैं। मेरा विषय भी इन्हीं पदार्थों पर गम्भीर प्रकाश डालना है। जीव विज्ञान मेरा विषय नहीं है, पुनरपि वर्तमान अन्ध कोलाहल के बीच कुछ युवकों के आग्रह पर मैं अपनी बात भौतिक विज्ञान की गहराइयों को छोड़कर वनस्पति व प्राणिजगत् की उत्पत्ति पर ही केन्द्रित करता हूँ।

जब पृथिवा जैसा कोई ग्रह अपने तारे से पृथक् होता है। धीरे-२ व आग्नेय रूप ठंडा होकर द्रवीय रूप में परिणत होने लगता है और उस समय उत्पन्न जल वा प धीरे-२ ठंडे होकर वृष्टि होने से पृथिवी पर जल भी भरने लगता है। जो भाग जल से बाहर रहता है, वहाँ भी जीवन की उत्पत्ति हेतु आवश्यक तत्व आक्सीजन, हाइड्रोजन, कार्बन, नाइट्रोजन, D.N.A., R.N.A., वसा, अमीनो अम्ल, प्रोटीन, जल आदि विभिन्न रासायनिक अभिक्रियाओं के निरन्तर चलते रहने के कारण उत्पन्न होने लगते हैं। इनकी उत्पत्ति में सहस्रों वर्ष लगते हैं। ये सभी पदार्थ इस पृथिवी पर यत्र-तत्र द्रव व गैस रूप में भर जाते हैं। सद्यः उत्पन्न सागरों में भी ये पदार्थ उत्पन्न हो जाते हैं। इनके पुनः अग्रिम विकसित व संयुक्त रूप से एककोशीय वनस्पति की उत्पत्ति होती है। **विभिन्न एटम्स व छोटे मॉलीक्यूल्स के विशिष्ट व बुद्धिजन्य संयोग से वनस्पति कोशिका की उत्पत्ति अति रहस्यमयी व व्यवस्थित प्रक्रिया है। यह बात सदैव ध्यातव्य है कि सूक्ष्म रश्मियों से लेकर वनस्पति-कोशिका के निर्माण के सहस्रों चरणों का संचालन किसी यदृच्छया (मनमानापन) प्रक्रिया से सम्भव नहीं हो सकता और न ही यह सब निष्प्रयोजन और अनियंत्रित प्रक्रिया है, बल्कि यह ईश्वर तत्व द्वारा बुद्धिपूर्वक प्रेरित, नियंत्रित व एक विशिष्ट प्रयोजनयुक्त प्रक्रिया है।** एक-२ कोशिका की संरचना को ध्यान से देखें, तो पायेंगे कि इसमें अरबों सूक्ष्म कणों का एक विशिष्ट वैज्ञानिक संयोग है और उनमें से प्रत्येक कण सैकड़ों सूक्ष्म वैदिक रश्मियों का विशिष्ट संयुक्त वा विकसित रूप है। इस कारण सर्वत्र चेतन शक्ति की अनिवार्य भूमिका है। इसके बिना यह प्रक्रिया एक कदम आगे नहीं बढ़ सकती। यह भी ध्यातव्य है कि जल, वायु, भूमि एवं इनमें वा इनके द्वारा नाना जीवनीय तत्व बनने के उपरान्त सर्वप्रथम वनस्पति की ही उत्पत्ति होती है। वनस्पति कोशिका के उत्पन्न होने, उसके जीवित रहने एवं उसके विकसित होकर पौधे के उत्पन्न होने के लिए अवश्यक तत्वों की उत्पत्ति पहले होती है, उसके पश्चात् ही वनस्पति कोशिका का जन्म रासायनिक प्रक्रिया से होता है। प्राणी कोशिका वनस्पतियों के निर्माण के पश्चात् ही उत्पन्न होती है। इसका कारण है कि सभी जीव-जन्तु वनस्पतियों पर ही प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूप से निर्भर हैं। मांसाहारी प्राणी शाकाहारी प्राणियों पर निर्भर रहते हैं। **इस कारण वनस्पतियों की उत्पत्ति के पश्चात् जीव जन्तुओं की उत्पत्ति एककोशीय जीव से ही प्रारम्भ होती है।** वनस्पतियों में भी सरल से जटिल संरचना वाली वनस्पतियों की क्रमिक उत्पत्ति होती है। **क्रमिक उत्पत्ति का अर्थ यह नहीं कि शैवाल विकसित होकर वट वृक्ष बन जाये अथवा पीपल, आम और बबूल बादाम का रूप ले ले।** इसी प्रकार एककोशीय जीव अमीबा की उत्पत्ति भूमि वा जल में होती है, लेकिन **कोई जीव भले ही वह एककोशीय हो अथवा बहुकोशीय, केवल कुछ पदार्थों का रासायनिक संयोग मात्र ही नहीं होता, अपितु उसके अन्दर सूक्ष्म चेतन तत्व जीवात्मा का भी संयोग होता है।** सम्पूर्ण संयोग ही जीव का रूप होता है। वर्तमान विज्ञान भी रासायनिक संयोगों से कोशिका की उत्पत्ति मानता है-

A very important step the formation of a cell must have been the development of lipid mambrane. In order that biological systems can function efficiently, it is essential that the enzymes connected with successive stages of syntheisis of biochemical pathway should be in a close a proximity to one another. The necessary conditions for this are obtained in cells by means of lipid mambranes which can maintain local high concentration of reactants. The presence of hydrocarbons early in the earth's history has already been mentioned....

Life requires for its maintanance a continous supply of energy. This could have been provided by ultraviolet or visible light from the sun, or possibly partly from the break down of unstable free radiations produced in the earth's atmosphere by ultraviolet light [Cell Biology, page-474 by E.J. Ambrose & Dorothy M. Easty, London-1973]

भाव यह है कि इस पृथिवी पर रासायनिक, जैविक क्रियाओं से विभिन्न प्रकार के एंजाइम्स का निर्माण होकर जीवन हेतु आवश्यक पदार्थों का निर्माण हो गया। इसके साथ ही अनेकत्र रासायनिक पदार्थों द्वारा ही कोशिका भित्तियों तथा जीव द्रव्यादि का निर्माण इस भूमि पर हुआ तथा उन कोशिकाओं को सतत पोषण देने का कार्य पृथिवी पर उपस्थित आवश्यक रासायनिक पदार्थों तथा सूर्य के प्रकाश ने किया।

कुछ वैज्ञानिक ऐसा मानते है कि पृथिवी पर जीवन किसी अन्य ग्रह से आया, उनसे हम जानना चाहते हैं कि जिस प्रकार किसी अन्य ग्रह पर जीवन की उत्पत्ति हो सकती है, उसी प्रकार इस पृथिवी पर क्यों नहीं हो सकती ? वस्तुतः ऐसा विचार सर्वथा अपरिपक्व सोच का परिणाम है। वर्तमान कुछ वैज्ञानिक भी इस धारणा से सहमत

Samajists ate food cooked by them and drank water brought by them. Last year I went to Benares and in that very centre of Hindu orthodoxy addressed a huge meeting on this question, and challenged the pandits to outcaste me and others working with me. I did the same only lately at Muradabad and Bareilly. The Arya Samajists in these districts are maintaining a number of schools for the Chamar boys, who alone number 60 lacs in the United Provinces. The untouchables in the U. P. number about a crore and a quarter in a total Hindu population of about four crores, and the problem there is gigantic. The great need in those provinces is a mission solely devoted to the work, consisting of good Hindus, who really believe in the Hindu Shastras and have a genuine respect for Hindu life and thought." These extracts give a fair idea of the influence of the Arya Samaj in the sphere of social uplift. It is a magnificent work, of which any single Indian organization may well be proud. But no one feels more than we do how little has yet been achieved in this line. We are yet only on the fringe of the area to be conquered, and many a battle will have to be fought before the victory is achieved. The Arya Samaj as a body is, however, conscious of the magnitude as well as of the importance of the work, and their success is, humanly speaking, almost certain. Their feeling may well be expressed in the words of the poet

It may be that the gulfs will wash us down

It may be we shall touch the Happy Isles,... but something were the end, Some work of noble note, may yet be done.

—**Tennyson, Ulysses**

नहीं हैं । वे कहते हैं-

The view the life did infact originate on the earth itself after it had cooled over a period of many thousands of years is almost universally accepted today. [Cell Biology, page-474]

जो वैज्ञानिक अमीबा से विकसित होकर अर्थात् एक प्रजाति से दूसरी प्रजाति के उत्पन्न होने की बात करते हैं, वे यह नहीं विचारते कि न तो वनस्पति में और न प्राणियों में ऐसा परिवर्तन सम्भव है और न इसकी कोई आवश्यकता है । हम यहाँ वैज्ञानिकों के कल्पित व मिथ्या विकासवाद पर कोई प्रश्न इस कारण नहीं करेंगे, क्योंकि हम इस पर पहले अनेक प्रश्न कर चुके हैं। जो डार्विन के विकासवाद की विस्तार से समीक्षा चाहते हैं, उन्हें आर्य विद्वान् पं.रघुनन्दन शर्मा द्वारा लिखित **'वैदिक सम्पति'** नामक ग्रन्थ पढ़ना चाहिए । भला **जब अमीबा की उत्पत्ति रासायनिक क्रियाओं से हो सकती है, तब विभिन्न प्राणियों के शुक्राणु व अणअडाणु की उत्पत्ति इसी प्रकार क्यों नहीं हो सकती ?** जब ५०० से अधिक गुणसूत्रों वाला अमीबा रासायनिक अभिक्रिया से उत्पन्न हो सकता है, तब बन्दर, चिम्पैंजी, ओरांगउटान जिनमें ४८-४८ गुणसूत्र होते हैं, ४६ गुणसूत्र वाले मनु य में स्त्री व पुरुष के २३-२३ गुणसूत्र वाले शुक्राणु व अण्डाणु की उत्पत्ति अमीबा की भांति क्यों नहीं हो सकती । मनुष्य के ही बराबर गुणसूत्र वाले Sable Antelope जैसें हिरन जैसे पशु तथा Reaves's Muntjac नामक हिरन जैसे जानवर के शुक्राणु व अण्डाणु, ५६ गुणसूत्र वाले हाथी के शुक्राणु व अण्डाणु क्यों उत्पन्न हो सकते ? चींटी, जिसमें केवल २ गुणसूत्र ही होते हैं, वह क्यों उत्पन्न हो सकती ?

यहाँ वैदिक मत यह है कि जिस जीव के भरण-पोषण हेतु जितने कम पदार्थों की आवश्यकता होती है, वह जीव उतना पहले ही उत्पन्न होता है । सभी प्राणियों से पूर्व वनस्पतियों की उत्पत्ति होती है और मांसाहारी प्राणियों से पूर्व शाकाहारी प्राणियों की तथा शाकाहारियों में मनुष्य एक ऐसा प्राणी है, जिसे सबसे विकसित वा उन्नत माना जा सकता है एवं वह विभिन्न प्राणियों व वनस्पतियों पर निर्भर रहता है, इसी कारण उसकी उत्पत्ति सबसे बाद में होती है ।

अब प्रश्न यह उठता है कि भ्रूणों का विकास बिना मादा के कैसे होता है ? शुक्राणु व अण्डाणु तो मानलें रासायनिक क्रिया के फलस्वरूप भूमि वा जल में उत्पन्न हो गया परन्तु शुक्राणु व अण्डाणु का निषेचन व भ्रूण का विकास कहाँ व कैसे हुआ ? इस विषय में मनुष्योत्पत्ति की चर्चा करते हुए **महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' नामक ग्रन्थ में युवावस्था में भूमि से उत्पत्ति बताई है** । उन्होंने तर्क दिया है कि यदि शिशु अवस्था में उत्पत्ति होती तो, उनकी रक्षा व पालन कौन करता तथा यदि वृद्ध उत्पन्न होते, तो वंश परम्परा कैसे चलती ? इस कारण मनुष्य की युवावस्था में ही भूमि से उत्पत्ति होती है । यद्यपि इस विषय में उन्होंने कोई प्रमाण नहीं दिया परन्तु हमें **ऋग्वेद** के प्रमाण इस विषय में मिले, जहाँ लिखा है-

उप सर्प मातरं भूमिमेतामुरुव्यचसं पृथिवीं सुशेवाम् ।

ऊर्णम्रदा युवतिर्दक्षिणावत एषा त्वा पातु निर्ऋ तेरुपस्थात् ॥ १०.१८.१०

इस पर मेरा आदिभौतिक भाष्य

- हे जीव ! **(सुशोम्) (सुशेवः सुसुखतमः- निरुक्त ३.३)** उत्तम सुख देने में सर्वश्रेष्ठ **(एताम्)** इस **(मातरम्)** माता के समान **(भूमिम्)** प्रारम्भ में जिसके गर्भ में सभी प्राणी उत्पन्न होते वा जिस पर सभी प्राणी निवास करते हैं, वह पृथिवी **(उरु-व्यचसम्)** अति विस्तार वाली होकर सभी भ्रूणों को **(उप सर्प)** निकटता से प्राप्त होती है, इसके साथ ही उस गर्भ का आन्तरिक आवरण निरन्तर हल्का स्पन्दन करता रहता है **(ऊर्णम्रदा) (ऊर्णम्रदा इत्यूर्णमृद्वीत्येवैतदाह- काश. ४.२.१.१०, साध्वी देवेभ्य इत्येवैतदाह यदाहोर्णम्रदसं त्वेति- श. १.३.३.११)** वह भूमि उन भ्रूणों को ऐसा आच्छादन प्रदान करती है, जो ऊन के समान कोमल, चिकना व आरामदायक हो । वह उस दिव्य भ्रूण को सब ओर से गर्भ के समान सुखद स्पर्शयुक्त घर प्रदान करती

है। (युवतिः) उस गर्भरूप पृथिवी में नाना जीवनीय रसों के मिश्रण-अमिश्रण की क्रियाएं निरन्तर चलती रहती हैं (दक्षिणावतः) वह पृथिवी उन भ्रूणों को तब तक पोषम प्रदान करती रहती है, जब तक वे अपना पालन व रक्षण करने में पूर्ण दक्ष अर्थात् सक्षम न हो जायें (एषा) यह भूमि (त्वा) तुम जीव को (निर्ऋतिर्निरमणात् ऋच्छतेः च्छ्रापत्तिरितरा- निरु. २.८) पूर्ण रूप से निरन्तर सानन्द रमण करती है, ऐसे सुरक्षित व उत्तम स्थानों में (पातु) उन भ्रूणों वा जीवों का पालन करती है। इसके साथ ही जहाँ क्लेश पहुंच सकता है, ऐसे असुरक्षित स्थानों से उस भूमि के गर्भरूप आवरण उस जीव वा भ्रूण की रक्षा करते हैं।

उच्छ्वञ्चस्व पृथिवी मा नि बाधथाः सूपायनास्मै भव सूपवञ्चना)
माता पुत्रं यथा सिचाभ्येनं भूम ऊर्णुहि ॥

मेरा आधिभौतिक भाष्य - (पृथिवि) वह गर्भरूप पूर्वोक्त पृथिवी (उच्छ्वञ्चस्व) उत्भटरूपेण ऊर्ध्व दिशा में स्पन्दित होती हुई किंवा उफनती हुई होती है। (मा बाधथाः) उस भूमि का आवरण ऐसा होता है, जो उसके अन्दर पल रहे भ्रूण वा जीव रहते हैं (अस्मै) वह इस जीवन के लिए (सूपायना- भव) वह भूमि उसे पोषक व संवर्धक जीवनीय तत्वों का उपहार भेंट करती है (सूपवञ्चनम् = दुबकना- आप्टे) वह भूमि आवरण उन भभ्रूणों वा जीवों को अच्छी प्रकार छिपाकर आश्रय प्रदान करता है (माता यथा) जिस प्रकार माता अपनी सन्तान को गोद वा गर्भ में ढक कर सुरक्षा प्रदान करती है, उसी प्रकार (नि-सिचा भूः) (नि+सिच्)-ऊपर डाल देना, गर्भयुक्त करना- आप्टे) भूमि के वे भाग उन जीवों को अपने गर्भ में लेकर उनके ऊपर नाना आवरणों के द्वारा (एन) उन जीवों को (अभि ऊर्णुहि) सब और से आच्छादित कर लते हैं।

उच्छ्वञ्चमाना पृथिवी सु तिष्ठतु सहस्रं मित उप हि श्रयन्ताम्।
ते गृहासो घृतश्चुतो भवन्तु विश्वाहास्मै शरणाः सन्त्वत्र ॥ १०.१८.१२

मेरा आधिभौतिक भाष्य - (उच्छ्वञ् चमाना) पूर्वोक्त उफनी एवं मृदु स्पन्दन करती हुई सी कोमल (पृथिवी) भूमि (सु तिष्ठतु) उन भ्रूणों वा जीवों की आच्छादिका होकर सुदृढ़ता से सुरक्षापूर्वक स्थित होकर उन जीवों को भी स्थैर्य प्रदान करती है (सहस्रम् मितः) उस भूमि के पृथक्-२ स्थानों में अनेक संख्या में (उप हि श्रयन्ताम्) जीव निकटता से आश्रय पाते हैं किंवा उन गर्भरूप स्थानों में बड़ी संख्या में (मितः = मिनोतिगतिकर्मा - निघं. २.१४) विभिन्न सूक्ष्म अणुओं का प्रवाह बना रहता है (ते गृहासः) भूमि के वे स्थान उन जीवों के लिए घर के समान होते हैं (गृंहाम् = गृहाः कस्माद् गृहूणातीति सताम्- निरु. 3.13) और घर के समान वे मूकोष्ठ उन जीवों को ऐसे ही पकड़े वा धारण किए रहते हैं, जैसे माता अपनी सन्तान को गर्भ में धारण किए रहती है (घृतश्चुतो भवन्तु) वे भूकोष्ठ ऐसे होते हैं कि उनमें घी के समान चिकने रस सदैव रिसते रहते हैं (अस्मै) वे उन जीवों के लिए (विश्वाहा) (विश्वाहा = सर्वाणि दिनानि- म.द.यभा. 7.10) सर्वदा अर्थात् पूर्ण युवावस्था तक (शरणाः सन्तु अत्र) इस अवस्था में वे जीव उन कोष्ठों में आश्रय पाते हैं।

इन मंत्रों में भूमि के अन्दर युवावस्था तक कैसे मनुष्य सहित सभी जरायुज प्राणी विकसित होते हैं, इसका सुन्दर चित्रण किया गया है।

जिस प्रकार अमीबा आदि एक कोशीय प्राणी की कोशिका का निर्माण रासायनिक व जैविक क्रियाओं से होता है, उसी प्रकार बहुकोशीय जरायुजों तथा अण्डजों के भी शुक्र तथा रज का निर्माण इस उफनी हुई कोमल तथा सभी आवश्यक पदार्थ, जो भी माता के गर्भ में होते हैं, से परिपूर्ण पृथिवी के धरातल की परतों में हो जाता है। अब हम विचारें कि भ्रूण के पोषण के लिए माता के गर्भ का आवश्यकता क्यों होती है? इस कारण, ताकि भ्रूण को आवश्यक वृद्धि हेतु पोषक पदार्थ प्राप्त हो सकें, भ्रूण को सुरक्षित कोमल, चिकना आवरण तथा आवश्यक ताप मिल सके। यदि इन परिस्थितियों को माता के गर्भ से अन्यत्र कहीं उत्पन्न कर दिया जाये, तो भ्रूण का विकास वहीं हो जायेगा, जिस प्रकार आज परखनली से बच्चे पैदा किये गये हैं।

हाँ, एक बात महत्व की है कि **उस समय मनुष्य वा कोई भी जरायुज युवावस्था में भूमि से उद्भिजों की भांति उत्पन्न होता है।** भगवद् दयानन्द जी महाराज का यह कथन सर्वथा उचित है कि यदि शिशु उत्पन्न होत, तो पालन कौन करे और यदि वृद्ध पैदा होते, तब उनसे वंश कैसे चलता? (देखें- **सत्यार्थ प्रकाश, अष्टम समुल्लास**) उपनिषत्कार ऋषि इसे और विस्तार देता है- **तस्माच्च देवा बहुधा संप्रसूताः साध्या मनुष्याः........ ॥ मुण्डक उप.२.१.७**

अर्थात् उस परमात्मा से अनेक विद्वान् सिद्धि प्राप्त जन तथा साधारण विद्वान् जन पैदा हुए।

आर्य विद्वान् **आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री** ने **''वैदिक युग और आदिमानव''** में बोस्टन नगर (अमेरिका) के स्मिथ सीनियन इंस्टीट्यूट के जीव विज्ञान के विभागाध्यक्ष **डाक्टर क्लार्क** को उद्धृत करते हैं-

Man appeared able to think walk and defend himself. अर्थात् मनुष्य सृष्टि के आदि काल में सोचने, चलने, चलने तथा स्वयं की रक्षा करने में समर्थ उत्पन्न होता है।

यहाँ कोई यह प्रश्न करे कि पृथिवी रूपी गर्भ मे पच्चीस वर्ष तक युवा कैसे पलता और बढ़ता रहा? तो इस पर गम्भीरता से विचारें, को कोई आपत्ति प्रतीत नहीं होती क्योंकि जिस प्रकार आज भी एक बालक, जो लगभग ९ मास माता के गर्भ में रहता है। प्रसव के पूर्व न श्वांस लेता है, न रोता है, न हंसता है, न हाथ-पैर फेंकता है, न खाता, पीता, मल-मूत्रादि विसर्जित करता है, उसमें प्रसव के तुरन्त बाद सभी क्रियायें तुरन्त प्रारम्भ हो जाती है। तव यह क्या अद्भुत बात नहीं है, आश्चर्यजनक नहीं है? यदि किसी व्यक्ति को इस सबसे दूर रखा जाये और इस प्रसव प्रक्रिया से नितान्त अनभिज्ञ होवे, तब वह इस प्रसव प्रक्रिया को सम्भव नहीं मानेगा। यदि उसने अण्डजों की ही उत्पत्ति देखी हो, तो वह जरायुजों की प्रसव प्रक्रिया को अण्डजों से भिन्न मानने को तैयार नहीं होगा। इसलिए युवावस्था में प्राणियों की उत्पत्ति असम्भव हीं है, हाँ अद्भुत अवश्य है। फिर इती सृष्टि प्रक्रिया की जटिलता, क्रमबद्धता, वैज्ञानिकता क्या अद्भुत नहीं है? तब युवावस्था में प्राणी उत्पत्ति कहाँ विचित्र रह जाती है?

वर्तमान समस्याओं के सन्दर्भ में वेदों की प्रासङ्गिकता

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

मनुष्य स्वभावतः सुखी हना चाहता है। उसके सामने कोई समस्या आने लगती है तो उससे दूर भाग कर अपने आप को बचाना चाहता है। फिर भी समस्यायें उसे छोडती नहीं अपितु तहस-नहस करने लगती हैं। ऐसे समय में वह भयभीत हो जाता है, उसे कोई रास्ता नहीं सूझता। परन्तु समस्याओं का समाधान तो करना ही पड़ता है। इसके लिए वह किसी की शरण चाँहता है जो उसकी उलझनों को सुलझा सके। शरणदाता की खोज करते-२ वह अनेकों का स्मरण करता है परन्तु उनमें सो कोई व्यक्ति ऐसा नहीं दिखाई देता जो उसकी समस्या को निर्मूल कर सके, क्यों कि वे सभी जन अनेक समस्याओं में स्वयं उलझे पड़े हैं। जिनके पास स्वयं पीने के लिए पानी भी न हो वे दूसरों को दूध कैसे पिला सकते हैं ?

ये समस्या एक नहीं अपितु व्यक्तिगत एवं सामाजिक रूप से अनेक हैं। व्यक्तिगत रूप से स्वास्थ्य समस्या या मनोजनित दुर्भावनाओं की समस्या। सामाजिक रूप से तो ऐस समस्यायें हैं जिनका समाधान तो दूर उनका गिनना भी स्वयं एक समस्या है। उदाहरण के लिए - अन्याय, उत्याचार भ्रष्टाचार, पाखण्ड, घूसखोरी, चरित्र हनन और सास्कृतिक विरासत का हनन आदि-२। उक्त सभी समस्याओं मे समाधान के लिए अपने आप को तैयार करना पडेगा। मानसिक शारीरिक एवं सामाजिक रूप से। प्रत्येक व्यक्ति उत्तम गुणों को धारण करेगा तो सभी समस्याओं का समाधान अपने आप हो जाएगा। इसके लिए कहा - ''दुरितानि परासुव'' हे मनुष्य ! तुम अपने दुर्गुणों को त्याग दो। जब व्यक्ति दुष्ट गुणों को त्याग देगा तो अन्याय अत्याचार आदि भ्रष्टाचार स्वयं दूर हो जायेंगे। आज देश में जितनी भी अव्यवस्था मची हुई है उन सभी का कारण दुष्ट अवहार-दुर्बुद्धि या दुर्गुण हैं। तो आइए ! इन सभी समस्याओं के जड़रूप दुर्भावनाओं ो दूर करने के लिए हम ऐसे गुरु की शरण में जायें जो हमें निष्पक्षरूप से कुछ सिखा सके। यह गुरु कोई शरीरधारी नहीं अपितु ज्ञान-विज्ञान के भण्डार वेदशास्त्र हैं। इनमें अनेक विषयों का उल्लेख किया गया है। जिनमें समानता की भावना, संगठन की भावना, पारिवारिक स्बन्धों की एकता, त्यागमय जीवन, राष्ट्रभक्ति आदि हैं। उनमें से कुछ विषयों पर विचार प्रस्तुत हैं, जो इस प्रकार हैं -

समानता की भावना :- ''मित्रस्य चक्षुपा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्'' अपने साथ या अपने चारो ओर रहने वाले सभी प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखें। जव व्यक्ति अपने सायी-संघी को मित्र समझेगा तो उसके साथ विश्वासघात नहीं कर समता, अपितु उसकी सहायता करके उसके कष्टों को दूर करने का ही प्रयास करेगा। न उसकी सम्पत्ति को दृड़पने की चेष्टा करेगा, न उस पर निराधार लाञ्छन लगाएगा, न उसकी हत्या करेगा, न ह उसे किसी प्रकार की पीड़ा पहुँचाएगा। देखिए ! किसी मनुष्य को मारते है तो उसे हत्या कह देते हैं, वही किसी पशु या अन्य प्राणी को मारते हैं तो उसे जायज ठहराया जाता है। परन्तु वेद में तो मनुष्य के समान सभी प्राणियों को अपना मित्र समझ उनकी रक्षा करके उनके साथ अपने जीवन को जोड कर आगे बढ़ने की बात नही गई है।

पारिवारिक सम्बन्ध :- ''मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् मा स्वसारमुत स्वसा'' भाई भाई से द्वेष न करें, बहिन बहिन से द्वेष न करें, अपितु समान मन वाले, समान संङ्कल्प वाले होकर आपस में प्रेमपूर्वक अवहार करें। ''अनुव्रतः पितुः पुत्रो माता भवतु सम्मना। आया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम्'' पुत्र पिता की आज्ञा का पालन करने वाला हो और माता के मन की भावनाओं को समझ कर तदनुरूप कार्य करने वाला हो। इसी प्रकार परिवार की आधारशिला पत्नी मधुर शान्त वाणी का प्रयोग करे। देखिए परिवार को एकसूत्र में आबद्ध करने का कितना सुन्दर उपाय वेद ने बताया है। परन्तु हम किसी न किसी पारिवारिक समस्या को लेकर अपने सम्बन्धों को बिगाड़ लेते हैं। विशेष रूप से धन-सम्पत्ति को लेकर या आपसी व्यवहार को। प्रत्येक व्यक्ति बड़ा बन कर अपना अधिकार जताना चाहता है। पर वेद कहता है ''व्यक्तेन भुञ्जीयाः'' त्याग पूर्वक जीवन जियो। जब त्याग की भावना प्रत्येक व्यक्ति में आएगी तो परिवारों में शान्ति बनी रहेगी। रामायणकाल के श्रीरमचन्द्र और भरत के त्याग को देखिए - राम ने तो भरत को राजगद्दी दे दी, पर भरत ऐसे हैं कि उसे लेना नहीं चाहते, यह कह कर कि इस पर तो ड़े भाई का अधिकार है मेरा नहीं। ऐसा अनूठा त्याग का उदाहरण अन्यत्र मिलना असम्भव है। इन भाइयों ने आश्रमों में रह कर वेद विद्या का अभ्यास किया था। तभी तो दुनियाँ वालों के सामने त्याग का उदाहरण प्रस्तुत कर सकें।

कर्मशीलता का उपदेश :- जीवन में उत्साही परोपकारी बन कर जियें, दीन हीन होकर नहीं। इसके लिए कहा - ''अदीनाः स्याम शरदःशतम्'' अर्थात् आप सौ से भी अधिक वर्षों का जीवन जियें परन्तु अदीन बन कर। संसार में अपनी पहचान स्वयं बनायें ''स्वयं वाजिंस्तन्वं कल्पयस्व स्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व'' ऐ गतिशील प्राणी ! तुम अपना विस्तार स्वयं करो, अपना कीर्तिमान स्थापित करो। स्वयं परिश्रम

करके उसका उपभोग करो । जीवन में हार कभी मत मानो सदा प्रयत्नशील बन कर आगे बढ़ो । "उक्राम महते सौभगाय" महान् सौभाग्य को प्राप्त करो । जीवन में कर्म करते हुए ही सौवर्षों तक जीने की इच्छा करनी चाहिए, इसके बिना कोई दूसरा मार्ग नहीं है ।

संगठन की भावना :- मेल-मिलाप में परस्पर के मधुर व्यवहार में ही जीवन का आनन्द है । परस्पर आदान-प्रदान का व्यवहार समान होना चाहिए । "देहि मे ददामि ते" तुम मुझे दो और मैं तुझे दूँ । इस प्रकार की यज्ञीय भावना होनी चाहिए । यह लेन-देन व्यापार में ह नहीं आपितु अन्नतसमाज के निर्माण में भी आवश्यक है । इसके लिए परस्पर के सोच-विचार में भी समानता होनी चाहिए । इसके लिए कहा - "समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्" अर्थात् हमारी न्त्रणा यानी सोचने का विधान एक होना चाहिए । हमारे विचार विनिमय का स्थान, मन के सङ्कल्प और चित्त में एकता होनी चाहिए । हम सब एक ही नदी के बहते हुए पानी को पीते है एक ही भूमि पर उपजे अन्न को खाते हैं और उसी भूमि पर हम सब अपने-२ कर्त्तव्यों का निर्वाह करते हैं । हम सबको उसी तेजः स्वरूप परमात्मा की उपासना करनी चाहिए जिससे कि हम सब भी तेजस्वी बन सकें । जैसे कि रय के चक्र के अरे मध्यभाग (नाभि) के साथ जुड़ कर चक्र को मजबूत बना कर रय का भार सरलता से वहन करते हैं ऐसे ही हम सब को भी एक साथ मिलकर संगठन को मजबूत बना कर समाज को नई दिशा देने के लिए कार्य करना चाहिए । इस सन्दर्भ में वेदमन्त्र में कहा - "समानी प्रपा सहवोडन्न भाग, समाने योक्ते सह वो युनाज्मि । सम्यञ्चोडग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः ।" देखिए संगठित होकर के समाज को उन्नत गतिशील बनाने की ठोस प्रेरणा उक्त मन्त्र में दी गई है । यदि हम इसका पालन करें तो व्यति की अलग से अपनी कोई लड़ाई नहीं रहेगी । परन्तु आज हम स्वयं व्यक्ति की पहचान अलग से चाहते हैं । लेकिन ध्यान रखिए-समाज का निर्माण करने के लिए व्यक्ति मे अस्तित्व को भुला देना होगा । समाज के हित में अपने हित को समाहित करना होगा । जैसे बीज अपने आप को गला कर वृक्ष को नया रूप देता है, वैसे ही हम अपने आप को समर्पित करके नये समाज का निर्माण कर सकते हैं । तभी तो महा है - ये कहावत है गत में कि जो गलते हैं वो फलते हैं ।

राष्ट्र के प्रति समर्पण :- संगठन समाज के निर्माण के लिए है तो समाज राष्ट्र के निर्माण के लिए । अतः राष्ट्र निर्माण की ओर संकेत करते हुए कहा- "वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः" हम राष्ट्र में जागरूक होकर रहें और इसका हित करने वाले पुरोहित बनें । हम राष्ट्र के प्रति इतने सजग और हितकारी वनें कि उसके साथ अपने अभिन्न सम्बन्ध का अनुभव करें । वह सम्बन्ध "माता भूमि, पुत्रो अहं पृथिव्याः" का है । भूमि मेरी माता है तो हम उसकी रक्षा करने वाली सनतान । जव यह भावना सबने मनों में आएगी तो कोई भी इस भूमि माता के साथ गद्दारी नहीं कर सकता । यदि कोई दुष्ट शक्ति उस पर आक्रमण करने की कोशिस करे तो आगे बढ़ कर यह कहेंगे - हे भूमि माता । हम आप पर किसी प्रकार का आक्रमण सहन नहीं करेंगे, विषैले सॉपों को आपकी छाती पर पलने नहीं देंगे । हम अपने आप का बलिदान करके क्यों न हो उनका सफाया करके छोड़ेंगे । हमने वेद से यह शिक्षा पाई है - "वयं तुभ्यं वलिदृतः स्याम" । इसकी संस्कृति है । जिसका आचरण प्रत्येक मनुष्य के द्वारा करणीय है । तभी तो कहा-"सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्व गरा" ।

प्राचीन वैदिक संस्कृति ने मनुष्य को जीने की भला सिखाई है । कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य, त्याज्य-अत्याज्य, ग्राहच-अग्रहच इन सबकी सीख दी है । इसके अलावा सृष्टि के रचयिता, सृष्टि का भोक्ता और सृष्टि यानी ईश्वर-जीव-प्रकृति इन सभी के सूक्ष्माति सूक्ष्म रहस्यों का प्रकाश वैदिक संस्कृति की देन है । जिनके मूल स्रोत वेद हैं । इसी वेद में कहा-"मनुर्भव" तुम मनुष्य बनो । देखने में तो मनुष्य दो हाथ दो पैरों वाला है परन्तु सही मानों में वह मनुष्य तभी कहला सकता है जब कि वह सोच-विचार कर कार्य करे, अच्छे बुरे की पहचान कर सके । अच्छाई को ग्रहण करके बुराई को छोड़ने के लिए सर्वदा उद्यत रहें ।

आइये ! जिस वेद में इस प्रकार के सुन्दर उपयोगी उपदेश-आदेश एवं सन्देश दिए गए हैं हम उनका अध्ययन करें, चिन्तन करें तदनुसार आचरण करें । अन्त में वेद की भाषा में ही देखिए - "संश्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन बिराधिषि" । तुम वेदानुकूल आचरण करो उसके विरुद्ध सभी नहीं । इसके लिए हमें अपने जीवन को यज्ञमय वनाना चाहिए । इसलिए तो कहा है- "इयं ते यज्ञिया तनूः" । तुम अपने जीवन को परोपकार मय बनाओ । तुम्हारे अन्दर की शक्ति को पहचानो और "अनया दैव्यं जनम्" दिव्य मानव समाज का निर्माण करो । राष्ट्र की हरप्रकार की उन्नति के लिए आगे बढ़ो । ऐसा न करने पर तेरा तेज ओज नष्ट हो जाएगा क्यों कि "अयज्ञियो दूतचर्या भवति" कहा है । तो आइए पहले स्वयं को और अपने राष्ट्र को तेजः सम्पन्न बनाने के लिए" कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का नारा बुलन्द करें । सारे संसार को श्रेष्ठ बनाते हुए आगे बढ़ें ।

उपर्युक्त कुछ विषयों के आकलन से पता चलता है कि वेद में कितने उपयोगी विषयों का उल्लेख किया गया है । जो हमारे जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं । इनके आचरण से ही हमारी सभी समस्याओं का आमूल समाधान हो सकता है । क्या अब भी आप को कोई सन्देह है ? हम तो कहते हैं वर्तमान समस्याओं के सन्दर्भ में वेद ही सबसे अधिक प्रासङ्गिक हैं । इतना ही नहीं, भूत एवं भविष्य में भी देकिए वेद प्रासाङ्धिक थे और आगे भी रहेंगे । इनकी शिक्षाएँ सभी कालों में सवके द्वारा अनुपालनीय हैं ॥

पं. नरेन्द्र जी : संघर्ष की प्रतिमूर्ति

-आचार्य अरविन्द शास्त्री

पं. नरेन्द्र जी का स्मरण आते ही मेरे हृदय में उल्लास भरे उमंगों के तरंग झंकृत होने लगते हैं। कद में छोटे किन्तु धैर्य और साहस में पर्वत से भी ऊँचे व्यक्तित्व मे धनी थे पण्डित जी। उनको निकट से देखने का, बात-चीत करने का और उनके क्रान्तिकारी विचारों को सुनने का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ। जिनसे मैं बहुत प्रभावित हुआ। पण्डित जी पूर्व निज़ाम स्टेट हैदराबाद में लोकप्रिय नेता थे। यहाँ के स्वतन्त्रता समय का हर व्यक्ति उनके त्यागमय जीवन से परिचित था।

पं. जी का जन्म एक सम्पन्न कायस्थ परिवार में सन् १९०७ में पुराना शहर (शाहअलीबण्डा) हैदराबाद में हुआ। यह वर्ष २००७ उनके शतजयन्ती समारोह के रूप में सारे भारत में विशेष कर आर्य प्रतिनिधि सभा ऑ.प्र.-तेलंगाना में बड़े जोश के साथ मनाया जा रहा है। जब सारा भारत देश अंग्रेजों के कठोर कुशासन को झेल रहा था तब हैदराबाद राज्य की स्थिति कुछ विचित थी। यहाँ का प्रत्यक्ष शासक एक क्रूर कट्टरपन्थी मुसलमान जिसका नाम मीर उस्मान अली खान था तो उसके ऊपर अंग्रेजों का शासन चलता था, यानी हैदराबाद की जनता एक ही समय में दोनों के दमनचक्र से पीड़ित थी। यहाँ का निज़ाम अंग्रेजों के इशारों पर नाचने वाला मठपुतली था। इस तरह की भयंकर संकट स्थिति से हैदराबाद के बहु-संख्यक हिन्दू स्वयं को दीन एवं असुरक्षित महसूस कर रहे थे। इस विषम स्थिति में हिन्दुओं को अपने जन्मसिद्ध अधिकार के लिए अर्थात् धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक अधिकारों को प्राप्त करने के लिए निज़ाम मे विरुद्ध संघर्ष हेतु एक अत्यन्त ओजस्वी त्यागशील एवं समर्पित व्यक्तित्व के रूप में पं. नरेन्द्र जी ने नेतृत्व का बागड़ोर सम्भाला। आर्य समाज के

सिद्धान्तों का घर-घर में प्रचार करके हिन्दुओं में आत्मसम्मान एवं सम्पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने की ललम जगाई। इनके क्रान्तिकारी एवं ओजस्वी भाषणों को सुनकर स्रोतागण वीर रस से सरावोर होते थे। भारत के लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल थे तो हैदराबाद की जनता पं. नरेन्द्र जी को यहाँ के लौह पुरुष के रूप में मानने लगी। इनकी बढ़ती लोकप्रियता ने निज़ाम के मन में डर पैदा कर दिया। जिससे उनकी नींद हराम हो गई। संसार में देखा जाता है साहसी व्यक्ति में सामने से स्वयं मृत्यु भी भाग जाती है। जेल से रिहा होने के बाद इनके हौंसले और भी बुलन्द हो गए। अपने तेज तर्रार भाषवों के माध्यम से निज़ाम और उसके पिट्ठू बहादुरयार ज़ंग को ललकारा एवं नवयुवकों में नई स्फूर्ति पैदा की। इस समय पण्डित जी नवयुवक हृदय सम्राट् की उपाधि से प्रसिद्ध हो गए।

अब निज़ाम पण्डित जी को एक खतरनाक दुश्मन समझने लगा। फलतः सन् १९३८ में हैदराबाद मुक्ति सत्याग्रह में आर्य समाज की ओर से भाग लेने के कारण राजनैतिक बन्दी बना कर हैदराबाद के अंदमान माने जाने वाले "मन्नानूर" (जि. महबूबनगर) में कठोर कारावास की राजा पर तीन साल के लिए जेल भेजा गया। निज़ाम के द्वारा इन्हें राज्यद्रोही ठहराया गया। इनके भाषणों पर पूरी तरह प्रतिबन्ध लगाया गया। इसके बाद १९४५ में फिर १९४७ में भी बन्दी बना कर जेल भेजा गया। इस तरह पं. नरेन्द्र जी ने राष्ट्रमुक्ति रूपी यज्ञ में अपनी भरी जवानी की आहुति देदी। अन्त में १९४८ में निज़ाम के निर्मम शासन से हैदराबाद मुक्त हुआ। इसके बाद इन्हें बहुत ही गौरवपूर्ण ढ़ंग से जेल से मुक्त किया गया।

१५ अगस्त १९४७ को भारत स्वतन्त्र हुआ। परन्तु हैदराबाद रियासत को अभी मुक्ति नहीं मिली थी। यह निज़ाम के जंजीरों में जकड़ा हुआ था। यह पं. नरेन्द्र जी के निर्देशन में अर्यनर-नारियों के संघर्ष के फल स्वरूप १७ सितम्बर १९४८ को मुक्त होकर भारत में विलीन हुआ। ये दोनों घटनायें भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से लिखी जाने योग्य हैं। किन्तु उस समय के जन जीवन का हर क्षेत्र अस्त-व्यस्त था। सामान्य जनता का दुःख-दर्द वर्णन से परे था। लोग निर्धन निरक्षर दीन-हीन होकर जीवन यापन कर रहे थे। समाज की इस दयनीय स्थिति को देख कर अन्य दिग्गज नेताओं के साथ ही पं. नरेन्द्र जी का दिल सिहर उठा। वे कहाँ चुप बैठने वाले थे ?

स्वराज्य को सुराज्य में परिवर्तित करने का पवित्र संकल्प मन में लेकर पुनः कार्यक्षेत्र में कूद पड़े । पूर्व निज़ामराज्य हैदराबाद स्टेट में अनेक स्थानों पर आर्य समाजों की स्थापना की गई । उनमें पाठशाला की अवस्था की गई । व्यायामशाला का प्रबन्ध किया गया । पण्डित जी स्वयं खादीउद्यम, राष्ट्रभाषा रक्षा आन्दोलन आदि अनेक कार्यक्रमों में भाग लेते रहे । इस प्रकार जनता का मनोबल बढ़ाकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का पूर्णप्रयास किया गया ।

त्यागी महापुरुषों की वाणी में एक विलक्षण आकर्षण होता है, यही बात पण्डित जी में देखने को मिलती है । उनकी वाणी प्राय) शौर्यपूर्ण हुआ करती थी । १९६७ की वात है हमारे आर्य समाज ''ओमनगर'' के तत्वावधान में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी उत्सव का आयोजन किया गया जिसमें जनता को सम्बोधित करने के लिए पं. नरेन्द्र जी आमन्त्रित थे । सभा में बॉसुरी वाले कृष्ण का सुन्दर चित्रपट रखा गया था, जिसे देख उनका प्रसन्न वदन खेद से भर गया । पण्डित जी की इस स्थिति का कारण आयोजकों को समझ में नहीं आया और वे भयभीत हो गए । जब उनका व्याख्यान देने का समय आया तो वहाँ उपस्थित हम सबको सम्वोधित करते हुए उन्होंने अपने मन की बात यूँ कही - ''सम्माननीय भद्रपुरुषो ! जन्माष्टमी पर्व के दिन संसार के मनुष्यों को आदर्श जीवन बिताने का पाठ पढ़ाने वाले श्रीकृष्ण जी का स्मरण करके मैं सहसा गद्‌गद हो उठता हूँ । परन्तु आपने जिन बॉसुरी वाले कृष्ण का चित्र यहाँ रखा है उसके स्थान पर चक्रधारी कृष्ण जी का चित्र लगाए होते तो मैं बहुत खुस होता । क्यों कि राष्ट्र व समाज को नियमों में बांध कर आगे बढ़ाने के लिए बाँसुरी की अपेक्षा चक्र की अधिक आवश्यकता है । हमें इस गलत फेहमी में भतई नहीं रहना चाहिए कि हमें आजादी मिल गई, हमारे सारे संकट टल गए । भोले लोगो ! आज भी इस भारतवर्ष को तहस-नहस करके मज़हव के नाम पर यहाँ की जनता को विभाजित करके आपस में लड़ाने के लिए मुसलमान और ईसाई जैसे राष्ट्रविरोधी तत्व इस देश में पनप रहे हैं । इनके षडयन्त्रों को परास्त करने के लिए कृष्ण जी का चक्र धारण करो । राष्ट्र व इनसानियत के इन दुश्मनों को बॉसुरी का प्यार भरा राग नहीं भाता । यहाँ उपस्थित हर नवयुवक को आर्य समाज में आने का निमन्त्रण देता हूँ । आओ ! हम सब उस चक्रधारी श्रीकृष्ण की रणनीति के अनुगामी बन कर इस देश से दुष्टों का सफाया कर देंगे । परमात्मा हमें ऐसी शक्ति दे ।'' ऐसे ये पण्डित जी के प्रेरणात्मक उद्‌गार ।

१९७५ में पं. नरेन्द्र जी सन्यासाश्रम में प्रवेश करके ''स्वामी सोमानन्द सरस्वती'' बने । यह दीक्षा समारोह केशस्मारक विद्यालय, नारायणगुडा, हैदराबद में एक विशाल सभा के रूप में सम्पन्न हुआ । इस भव्य सभा का अवलोकन करने का स्वर्णिम अवसर मुझे भी प्राप्त हुआ । आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् सन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी महाराज ने पण्डित जी को दीक्षा दी । उस समय के सार्वदेशिक सभा प्रधान ओमप्रकाश पुरुषार्थी आदि कई गण्यमान्य विद्वद्गण सभा में उपस्थित थे । दीक्षाग्रहण कार्यक्रम के पशचात् क्रम से वक्तागण अपनी ओजस्वी वाणी के माध्यम से मानो वेदज्ञानरूपी अमृत वर्षा कर रहे थे । विषय तुरीयाश्रम का था । मोक्षगामी के लिए एषणात्रय-(वित्तैषणा, पुत्रैषणा, लोकैषणा) को त्रिकरणों (मन-वाक्-शरीर) से त्यागने क अनिवार्यता का विषय चल रहा था । अध्यक्षीय भाषण से पूर्व पण्डित जी को अपने उद्‌गार व्यक्त करने का अवसर दिया गया । सभा में सन्नाटा छाया हुा था । पण्डित जी ने अव स्वामी ओमानन्द के रूप में गम्भीर मुद्रा में बोलना आरम्भ किया - ''अध्यक्ष महोदय ! एवं आर्य भद्रपुरुषो ! इस सभा में इच्छाओं को पूर्ण रूप से मिटाने की वात चल रही है । किन्तु मेरे मन में एक इच्छा तीव्ररूप से आग की तरह भड़क रही है । वह यह है- मैं परमात्मा से निरन्तर प्रार्थना कर रहा हूँ कि वह मुझे मुक्ति न दे, बल्कि इस भारत माता के गर्भ में मैं बार-बार जन्म लेकर गुरुवर दयानन्द के सपनों को साकार करने के लिए, ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' वेदोक्ति रो वास्तविकता में परिवर्तित क्ररने के लिए आर्य समाजरूपी इस हवन कुण्ड में मैं एक समिधा बन कर मानव समाज को प्रकाश प्रदान करने का कार्य करता रहूँ । यही प्रभु से मेरी इच्छा है ।'' पण्डित जी के इन वाक्यों ने जनता के दिलों को झमजोर दिया । स्रोता गण बहुत देर तक अपनी करतल ध्वनि से उनके उद्‌गारों को सराहते रहे ।

पण्डित जी अपनी संक्षिप्त आलकथा ''जीवन की धूप-छाँव'' नामक पुस्तक में लिखते हैं - ''सामाजिक जीवन में उतरने से पहले मैं ने दो बातों का निश्चय कर लिया था । (१) जीवन के वास्तविक उद्देश्य की खोज, (२) वैवाहिक जीवन में न बंधना । इन बातों के सम्बन्ध में समाझ बूझ कर और भविष्य में होने वाली सारी घटनाओं के सम्पूर्ण परिणामों से पूरीतरह से अवगत होने के वाद ही इस निर्णय पर पहुँचा, तो फिर मुझे दुखों, कष्टों और कठिनाइयों की कोई बाधा न थी ।''

जीवन के अन्तिम सॉस तक पण्डित जी अपने इन निर्णयों पर अडिग रहे । निज़ाम के शासनकाल में तीन बार कारावास के दण्ड के समय उन्हें वुरी तरह से शारीरिक यातनायें दी गईं । पुलिस द्वारा एक पैर भी तोड़ दिया गया । जीवन के अन्तिम काल में, उकी शारीरिक शक्तिक्षीण हो चुकी थी । इतना होने पर भी अपने स्वास्थ्य की परवाह न करते हुए दिन-रात आर्य समाज के संगठन एवं उन्नति के लिए हरक्षण प्रयास करते रहे । अन्त में २४ सितम्बर १९७६ को अपनी इह लीला समाप्त की ।

पण्डित जी के जीवन का उल्लेख किए बिना हैदराबाद का मुक्ति आन्दोलन का इतिहास अधूरा है । इस पावन धरती के विनीलाकाश में पण्डित जी ध्रुवतारा के समान सदा प्रकाशमान होते रहेंगे ।

उन्हें हमारा शत-शत वन्दन !

నివాసము వ్యవహారముల సబంధమైన నియమములు

-చిన్నయ్య వానప్రస్థి

1) నివసించు గదిని మిక్కిలి శుభ్రముగా నుంచ వలయును. ఊర్చుచు కడుగుచు ప్రతిదినము శుభ్రపరుచవలెను. గోడలపై మూలలో నుండే పురుగుల పట్టులను తొలగించుచుండ వలయును. నేలలను గదుల యందు అలుకు చుండ వలయును. కుర్చీ, బల్ల, అల్మార మొదలగు వాటిని కదిలించుచు అందుంచి వస్తువులను అరలను కూడ శుభ్రపరిచి క్రిమి సంహారక గోలీలను వేయుము. పెట్టెలను కూడ అట్లే భద్ర పరుచు చుండ వలయును. దూళి చేత తప్పుకొనిన ఆరోగ్య పరిరక్షణ జరుగును. ఇంటి అలంకారముల చేత విలాసత్వము గోచరించ రాదు. గృహాలలో దేవతల, మహా పురుషుల చిత్రపటముల నుంచుము.

2) గృహముల నుండి నల్లులు, దోమలు, ఈగలు మొదలైనవి ఏ విధముగనైనను దూర పరుచ వలయును. శుభ్రతకు ఆరోగ్యతకు ఇవి ముఖ్యము. ఇంటి మురికి కాలువలను ఫినాయిలుతో శుభ్రపరుచుము.

3) మురికికై పనికి రాని వాటిని వేయుటకై ఇంట్లో అచ్చటచ్చట పీపలను తొట్లను గంపలను గాని ఉంచవలెను. అందు కూడినచత్తాను ఉదయము సాయంత్రము చల్లి వేయ వలయును. లేక కాల్చి వేయవలెను.

4) పాద రక్షలను ఇంటిలో కంతటికి తీసుకెళ్లరాదు. మెట్లపైన నైన, వాటి కేర్పి రిచిన గూడు యందైనను ఒక చోటనే దాచుచుండ వలయును. భోజనాలయము వరకు వాటిని తేరాదు.

5) చెప్పులను, ఎంగిలి పాత్రలను ముట్టినచో చేతులను కడుగుకోవలయును.

6) వెలుపలి నుండి గృహములకు ప్రవేశించ గానే పాదరక్షలను దులుపుచు వాటికి అప్పుడప్పుడు పాలిష్ వేస్తుండ వలయును. ధరించుటకు ముందు లోపల వెలుపల వాటిని దులుప వలయును. తడిచిన పాదరక్షలను ఎండించిన తర్వాతానే వాడుకొనుము. తడి గుడ్డలను కూడ ధరించ రాదు.

7) వ్రాసెటప్పుడు చేతికి మసినంట నివ్వరాదు. అంటినచో రాచిరాచి చేతిని తక్షణమే శుభ్రపరుచుము

8) వ్రాతను ఎండించుటకై మసినద్దె కాగితములను వాడుము దుమ్ము మట్టిని వాడ రాదు.

9) కలముతో మసిని నేలపై గోడపై చిలకరించ రాదు. తలకు పూసికోరాదు.

10) మన్ను బుఱదలంటిన చెంబు, కడవ, బొక్కెనలను బావిలో ముంచరాదు. శుభ్ర పరిచి వాటిని ముంచ వలెను.

11) స్నానం బావికి దూరాన నీళ్లు తీసుకెళ్లి చేయుట చేత స్నాన జలము బావిలో పడదు.

12) నీటి బావులను శుభ్రముగా నుంచ వలెను. నీటిలో క్రిమి సంహారక మందులను అప్పుడప్పుడు కలుపుము.

13) త్రాగె నది నీటిని లోపలికెళ్లి తీసికో వలయును. అచ్చట గుడ్డలుతుకుటకై ప్రవాహము క్రిందికి వెళ్లవలెను. ఈ కట్టడులున్నచో నీళ్లు చెడవు.

14) రోగులతో పిచ్చివారితో ప్రసంగములు తగవు రోగితో మధురముగా మాట్లాడ వలయును. వారిని కించిత పరిచే మాటలు కూడవు. వారి క్రోధమును లెక్కించరాదు.

15) అంటు వ్యాధులచేత జాగ్రత్త పడ వలయును. కాని ఆ రోగులకు సహాయపడ వలయును. మశూచిరోగికై వాడిన పాత దుస్తులు మొదలైనవి కాల్చివేయవలయును లేక వాపాకు కలిపి వేడిచేసిన నీటిలో చాలసేపటి వరకు ఉంచి శుభ్రపరచ వలయును.

16) సాధారణ రోగుల వస్త్రములు పరుపులు రోజుకు మార్చు చుండ వలయును.

17) సేవాభావన గలవారు, సరదాగా వ్యవహరించు వారే సాధారణముగా రోగులను దర్శించ వలయును. రోగుల వద్ద జనులు గుమి గూడి ఉండరాదు. వారితో రకరకాల ప్రశ్నలు వేయరాదు. రోగులను దర్శించుటకు వెళ్లగా పసి పిల్లలు దగ్గరుండ రాదు.

18) ఉష్ణమాపకము వాడుటకు ముందు తదుపరి చన్నీటితో శుభ్ర పరుచ వలయును.

19) కన్నులను మిక్కిలి జాగ్రత్తగా కాపాడు కోవలయును. మెల్కొనగానే వాటిని శుభ్ర పరుచ వలయును. మురికి చేరినచో తక్షణమే తొలగించ వలయును. కంటి జబ్బువచ్చినచో, తీవ్ర సూర్య కాంతి దుమ్ము మరియు ఈగల చేత చాల జాగ్రత్త పడవలయును. ఆకు కూరలు, పాలు వెన్న శీఘ్రముగా జీర్ణమగు ఆహారము మేలు చేయును.

20) శయనించుచు చదువ రాదు. నిటారుగా కూర్చొని చదువుము. భోజనమైన తదుపరియె చదువుట కూడదు.

21) సాయంకాలములలో, తక్కువ వెలుగులో మరియు చీకటి యందు చదువరాదు.

22) చదువుచున్న సమయాన వెలుతురు వెనుక వైపునుండిగాని ఎడమ దిశ నుండిగాని వచ్చుచుండ వలయును. వెలుతురు (బల్బ్) ఎదుటనే నున్నచో వస్త్రం లేక కాగితములను అడ్డముగా ఉంచి వెలుతురును తగ్గించ వలెను.

23) వస్త్రములను ధరించుటకు పూర్వము వాటిపైగల దుమ్మును బాగుగా దులిపి శుభ్ర

పరుచుము. పరుపు యందలి వస్త్రముల నన్నింటిని ప్రతి దినము దులిపి శుభ్ర పరుచుచుండుము.

24) గోర్లను అధికముగా పెరుగనివ్వరాదు. అందు మురికి కూడరాదు. చేతులకు కాళ్లకు గోర్లకు వెంట్రుకలకు చమురులంటించు చుండ వలయును.

25) వస్త్రమును వాడుటకు పూర్వం వదిలిన తదుపరి వాటిపై గల్గియున్న దుమ్మును బాగుగ శుభ్రపరుచుము. పాద రక్షలు లేనిదే నడిచి వచ్చినచో గృహములో ప్రవేశించుటకు పూర్వమే కాళ్లను కడిగి కొనుము.

26) చేతులలో ఎల్లప్పుడు తుండు గుడ్డను లేక అంగవస్త్రముల నుంచుము. ధోతి, శాలువ, అంగి, చేయి మొదలగు వాటిచే ముక్కును శుభ్రపరుచరాదు. శుభ్రపరిచిన తదుపరి చేతిని ముక్కును నీటిచే కడుగుకో వలయును.

27) చీము రక్తము తుడువబడిన పత్తి వస్త్రములను కాల్చి వేయ వలయును.

28) క్షయరోగుల ఉమ్మని వారి ముఱికి గలిన చిరు వస్త్రములను భూమిలో మూసివేయాలి లేదా కాల్చాలి.

29) పసి పిల్లలను ఏడ్పించరాదు. సతతము వారిని ఎత్తుకోరాదు. స్వంత బలంపై నిలిచే టట్లు, నడిచేటట్లు వారికి సహాయపడు చుండుము.

30) పిల్లలను ముద్దుపెట్టుకొనుట, ఆరోగ్య రీత్యాకూడదు.

31) భూత ప్రేతముల ప్రసంగములు గల కథలు, భయ పెట్టే సంఘటనలను పిల్లలకు వినిపించ రాదు.

శయన సంబంధమగు అలవాట్లు

1) కిటికీలు మూసిన గృహముల యందు శయనించరాదు. గాలి ప్రవేశించు గదులలో వసారాలలో నిద్రించవలెను. కిటికీలను, తదితర గాలికై ఏర్పర్చిన వసతులను మూసి యుంచ రాదు.

2) శయనించు గదులలో, వస్తువులను నింపరాదు. వెలుగుచున్న దీపములచ్చటుంచ రాదు. అందలి కిటికీలను స్వచ్ఛమైన గాలికై తెరిచియుంచుము.

3) ఆరోగ్య రక్షణకై 7, 8 గంటలు నిద్రించుము. పిల్లలు ఎక్కువ సమయం వరకు నిద్రించ వలయును. ప్రాతఃకాలముల యందు తొందరగా మేల్కొన వలయును. తదాను సారం రాత్రులయందు ముందే శయ నించుము.

4) మూతి మూసికొన్నట్లు దుప్పటి గొంగడిని కప్పుకొనరాదు.

5) కాళ్లకు చేతులకు మోజాలు తొడిగి పండుకోరాదు.

6) రాత్రులందు ధరించే ఉన్న బట్టలను ఎండలో వేయుము. పత్తి దుస్తులను ఉతుకు చుండుము. నల్లని బట్టలకు ఉన్న బట్టలకు మైలనోర్చే బట్టలకు కూడ ముఱికి పట్టు చుండును. వాటిని కూడ శుభ్రపరుచు చుండుము. వాటి నుండి దుర్గంధము రారాదు.

7) శయనించు పురుపులను తగు నమయము వరకు ఎండలో నుంచ వలయును. పక్షులు మురికి చేయకుండునట్లు వాటిని చూచు చుండుము. ధరించు వస్త్రాలకు కూడ సూర్య దశ్మిని తాకించుచుండుము.

8) నిద్రించు వారిని తగని సమయాన అవసరంలేనిదే లేవరాదు. జనులు శయనించు చోట నెమ్మదిగా నడచుము.

వరస్పర వ్యవహార నంబంధ నియమములు గౌరవ సన్మానములు

1) పెద్దలను నర్వదా "మీరు" అనవలయును. "నీవు" అని పిలువరాదు.

2) ఉదయం నిద్రమేల్కొనగానే పెద్దలకు నమస్కరించుము. ఇతర పరిచయస్తులకు కూడ ప్రథమ దర్శనమున నమస్కరించుము. నిద్రించుటకు పూర్వం కూడ పెద్దలను నమస్కరించుము.

3) అనేక సద్గృహస్థులలో సాయంకాలము దీపారాధన చేయు సమయాన కూడ పెద్దలను నమస్కరించెదరు.

4) నూతనముగా ఒకరినొకరు పరిచయము చేసుకొనే సమయాన కూడ పరస్పరముగా నమస్కరించుకొందురు.

5) లవంగాలు యాలకులు పురస్కారముగా అందించు వ్యక్తిని కూడ నమస్కారముతో సత్కరించుము.

6) రెండు చేతులను జోడించుచు నమస్క రించుము. మొరుటుగా వ్యవహరించడము తప్పు.

7) ప్రణామము బిగ్గరగా అరచుచు చేయ రాదు. దగ్గరి కేళ్లి చేయుము.

8) పరదేశమునకేగే సమయాన తిరిగి వచ్చిన సమయాన విశేష సంస్కారము జరిగే చోటున తమ తమ పెద్దల ఆశీర్వాదములను పొంద వలయును. చరణ స్పర్శ సమయాన రెండు చేతులను పైకెత్తి నమస్కరించి పాదములను స్పర్శించుము.

9) వృద్ధులు పిలిచినప్పుడు "ఏమి" "యా" లేదా "హా" లనరాదు. "ఏమండీ" "ఏమయ్యా" లేక ఉచితమగు రీతిన వ్యవహరించ వలయును. బంగాల్‌లో ఈతరి "ఆజ్ఞ" అనడము మరియు రాజస్థాన్‌లో "ఆదేశ్" పలకడం వాడుకలలో నున్నవి.

10) జనులను పిలుచేటప్పుడు, ఉత్తరంలో నంబోధించు సమయాన వారి పేర్లకు ముందు "శ్రీ" అదవా "శ్రీమతి" పదములను, అతవా "శ్రీయుత" లను చేర్చవలయును. తమ పేర్లకు ముందు వ్రాతలలో వీటిని చేర్చరాదు. పండిత్, బాబు, మోల్వి, సాహబ్, గారు (చివర) జోడించరాదు.

11) గొప్పవారికి ఎదుట వీపునుంచు చున్నట్లు కూర్చోరాదు. గురువుగారితో కలిసి ఒకాసన ముపై కూర్చోరాదు.

12) గురువు తండ్రి గారితో కలిసి పోవుట తటస్థించగా వారి వెనుకకు రెండడుగులైన నుండుము. వారు వెనుకకున్నచో నిలిచి వారికై ముందు దారి నివ్వవలయును. వారు తెచ్చుచున్న వస్తువులను తాము తీసికో వలయును. ద్వారములో ప్రవేశించు చోట వారినే ముందు వెళ్ల అవకాశముల నివ్వ వలయును. ద్వారం మూసియున్నచో మీరే తెరువండి. తెరయున్న ప్రక్కని వారు వెళ్లి వచ్చునంతవరకు, దానిని పట్టుకొని ఉండుము. చీకటి గల్గిన చోట వెలిగించుము.

13) కలసి చేయవలసిన పనులలో లఘు కార్యాలను ముందు గొప్ప పనులను పిదప చేయవలయును. పెద్దలను ప్రతీక్షించక చిన్నవారే ముందుపనిని ప్రారంభించవలెను.

14) దూరం వ్యక్తిని పిలుచుటకై పెద్దలు ఆజ్ఞాపించినచో అచ్చటి నుండియే కూత వానికై వేయక, దగ్గరి కెళ్లి పిలువుము.

15) కథా, వ్యాఖ్యానము, భజన, సభల నుండి అకస్మాత్తుగా లేచి పోరాదు. అవి సమాప్తమైన వెనుకనే వెళ్లవలెను. మధ్యలో లేవడము తనలోని ఓర్పు లేమిని విదిత పరుచును. ఆ ఉపన్యాసకునిగాని, గాయకుని గాని నిరాద రించుటయే కాగల్గును.

16) వ్యాఖ్యానములో, కథా ప్రసంగములో మాట్లాడరాదు. ఆలస్యముగా వచ్చు వారు వెనుకనే కూర్చో వలయును. ముందు కేగుటకై ప్రయత్నించరాదు. దగ్గుచు అచ్చట అంత రాయం గల్గించరాదు. కునికి పాట్లు పడుచుండుట, వార్తా పత్రికల నచ్చట చదువు చుండుట తగని పనులు, వాచనాలయముల యందు కూడ మౌనమును పాటించుము.

17) పెద్దలు క్రిందకున్నప్పుడు తాను పైనుండి మాట్లాడక, వారిదరిచేరి మాట్లాడవలెను. గొప్పవారు నిలువగా మనం కూడ నిలువ వలయును. నిలిచియే వారితో సంభాషించ వలయును. అనగా ఉచితమును పాటించుము.

18) బల్లపై వంగి ప్రసంగించరాదు. నిలువ వలసిన నిటారుగా కూర్చోవలసినచో వెన్నెముకను చక్కగా నుంచుము.

19) మన అతిథి లేక పెద్ద మనిషి భిన్నముగా కొంతవరకు వ్యవహరించినను నవ్వరాదు.

20) పెద్దలతో వాహనము యందు కూర్చో వలసినచో వారికి వారికి ఎడమ భాగమున లేక ఎదురుగనో కూర్చుండుము. ఉభయులు వేరు వేరు వాహనములందు ప్రయాణము చేయుచున్నచో, మాట్లాడ వలసివచ్చిన తమ వాహనములను ఆపి నెమ్మదిగా మాట్లాడ వలయును.

21) అతిథులకు పెద్దలకు పరుపు మంచము సమకూర్చినచో అవి తమకు శిరము వైపున, అథవా ప్రక్కకు ఉండవలయును.

22) వారిని నిలిచియే సత్కరించ వలయును. వారు కూర్చొని నంత వరకు నిలిచియే యుండవలయును. వెళ్ళేటప్పుడు వారిని వాహనము వరకు, లేదా తమ చివరి ద్వారము వరకు సాగనంపవలయును.

23) ఇంటిలోకి వచ్చిన శత్రువును కూడ నిరాదరించరాదు.

24) సంధ్యా సమయాన తమ గృహమునకు ప్రవేశించిన వారిని గృహస్థులు సత్కరించుచు వారికై భోజనం ఏర్పాట్లు కూడ సమకూర్చ వలయును.

25) జలపానము అథవా భోజనం సమయాన అతిథి (విద్వాంసుడు, సన్యాసి, వానప్రస్థి) వచ్చుచో వారిని వాటితో సత్కరించ వలయును. ముందు వారు సేవించునట్లు చూడవలయును. ఒకేసారి పంక్తిలో భుజించ వలసిన వారికి ముందు వడ్డన జరుగవలెను. గొప్పపాత్రలు వారికై యుంచుము. వారు భుజించడము ప్రారంభించిన తదుపరి సామాన్యులు సేవించవలెను.

26) నవ వివాహితులకు, బాల బాలికలకు, గర్భవతులకు రోగులకు అతిథులకు ముందు భోజనము చేయించవలయును.

27) దాస దాసి జనులకు, అతిథులకు భోజనం ఏర్పాట్లు చేసిన తదుపరియే యజమానులు భుజించవలెను.

28) లవంగాలు ఏలకులు ఎదుటనుంచినచో ఒకటి రెండు మాత్రమే తీసుకొనుము. అన్నింటిని తీసికోరాదు.

29) యజమాని, గురువుగారి, గొప్పవారి ఆసనములయందు వారు లేనప్పుడు కూర్చో రాదు.

30) అతిథులుగా వెళ్లిన గృహంలో, వారు భుజించే వేళనే అతిథులు భుజించ వలయును. భోజనము చేయనిచో వారికి పూర్వమే తెలుపవలయును.

31) పెద్దలతో నడిచే సమయాన గొడుగు ఒకటే యుండిన దానిని తామే పట్టుకో వలయును. వారికది తగులరాదు.

32) 'మీ శుభ నామ ధేయ మేమ'ని పరులను పేరడుగ వలసినచో, నమ్రతతో అడుగుము.

33) మిత్రుని వెంబడి అపరిచితుడున్నచో, మిత్రుని సంబోధించుచు, అపరిచితుని చూచుచు-'ఈ సజ్జనులెవరని' అడుగ వలయును.

34) గొప్పవారు ఇతరులను ఉచితముగా సత్కరించునప్పుడు దయచేసి.... కూర్చొనుడు... చెప్పండి అని సంబోధింతురు.

35) ఇతరుల తల వెంట్రుకలను లాగరాదు. కొట్టరాదు.

36) ఉమ్మివేయునప్పుడు గాలివీచె స్థానమును గమనించుము. పరులపై పడనట్లు చూడుము.

37) కూలికి మించిన కష్టమును వారితో చేయించుకోరాదు.

38) తిట్టుచుండే వారిని తిట్టుట కూడ దిగజారిన చేష్టయే.

39) తమ సమానులై తోటివారితో కూడ మర్యాద పూర్వకముగానే నవ్వవలయును. విద్యావృద్ధులతో, వయోవృద్ధులతో, పద వృద్ధులతో మరియు పూజ్యులతో వెంబడి-వెంబడి నవ్వుట మర్యాద పరిధిని దాటినదియే గాకల్గును.

40) వాహనములందున్న వారికి, వృద్ధునికి, రోగికి, స్త్రీకి, స్నాతకునకు, కుంటి, గ్రుడ్డివారికి, పెండ్లికొడుకుకు, రాజుకు, బరువు మోయు వారికి ముందు మార్గము విడవ వలయును.

41) త్రాగి, సభల లోపలికి రాకూడదు.

వివిధ విషయములతో సంబంధమగు ఆచారములు

1) పరుల గృహములలో యిష్టం వచ్చినట్లు వ్యవహరించరాదు. ఇంటి వారి సౌకర్య ములను గమనించుచు మెలుగుము.

2) తమ యింటి మురికిని, గేరిలో మార్గంలో వేయరాదు. ఎచ్చట వీలైన నచ్చటనే ఉమ్మి వేయుచు చరించరాదు.

3) తుమ్ముల, ఆవలింపుల సమయాన తుండు గుడ్డను చేతులను ముఖమున కెదుట నుంచుము. ఇతరులను చూచుచు తుమ్ముట ఆవలించుటలుచితములు కావు.

4) సార్వజనిక మార్గములు నదులు చెఱువులు బావులలో ముండ్లు గాజుముక్కలు హానికరము లగు విషములు వేయరాదు.

5) సార్వజనిక స్థానములను సత్రములను అపవిత్ర మొనర్చ రాదు. అచ్చటి నియమములను పాటించవలెను.

6) జరిగిన తమ అపరాధములకై మనసార క్షమాపణమును కోరవలయును. కాని మళ్లీ అపరాధము, క్షమాపణములు తగవు.

7) వరులిచ్చె మిఠాయిని, పైన రూపాయిని పండ్లను తల్లిదండ్రుల అనుమతి లేనిదే భుజించరాదు, గ్రహించరాదు.

8) ఇతరులకు ఇచ్చుటకై వారితో గ్రహించు టకై కుడి చేతినే వాడు చుండ వలయును.

9) ఇతరుల వ్యాఖ్యానము ప్రసంగము వివరణలు ముగిసిన పిమ్మట తాము తమ ప్రసంగమును ప్రారంభించుము.

10) నీచుల సాంగత్యము నుండి సతతము దూరముండుము.

11) పతి పత్నులు పరాయి పురుషుల ఎదుట నవ్వులు వరిహాస్యములు సలుపుకొనరాదు.

12) పరుల రహస్యములు వినుటకై యిష్ట పడుట తగదు. దాగి దాగి వాటిని వినుటకై ప్రయత్నించు చుండుట మూర్ఖుల లక్షణము.

13) అలవాటుగా గోర్లు కొరుకుకొనుట, నోటిలో వ్రేలు వేసికొనుట అసభ్యకరమగు చేష్టలు.

14) నిద్రనుండి మేల్కొని కండ్లు మూతి శుభ్రపరుచు కొననిదే ఎవరితోను మాట్లాడ రాదు.

15) వ్యాఖ్యానము చేయునప్పుడు, ఒకే వైపుకు చూడరాదు. చేతులు, ముఖము, కాళు ల్లచ్చట అకారణముగా కదిలించరాదు.

16) తాము వాహనంలో వెళ్లుచుండగ దారిన నడిచే స్నేహితునికి, వృద్ధునకు అగపడినచో వాహనంలో స్థానమొసగుము.

17) శ్రోత్రీయుని, ద్విజుని మరియు గురువు గారి ధనము గ్రహించకుము.

18) అప్పిచ్చుట మరియు తీసికొనుటలు, చెడ్డవి.

19) శిఖను ముడి వేయుము. టోపిని ధరించుచున్నచో శిఖను దాని లోపలికి దాచుచుండుము.

20) రైలు, బస్ ప్రయాణములలో నిలిచి యున్న స్త్రీలకు, వృద్ధులకు స్థలముల నివ్వవలయును.

21) దారికెడమగా నడుచుటను సతతము పాటించుము.

ఇతర సాధారణ వ్యవహారములందు పాటించ తగిన నియమాలు

1) ఉదయించే అస్తమించే మరియు మధ్యాహ్న సమయాలలో తీక్ష్ణ సూర్యకిరణములను దర్శించవలదు. ఆ కాంతిని నీటిలో కూడ చూడరాదు.

2) నీటిలో తమ ఛాయను చూడరాదు. వర్షంలో పరుగెత్తరాదు.

3) ఏక వస్త్రదారియై భుజించ వద్దు, నగ్నముగా స్నానం కూడదు. గోశాలయందు, దున్నిన పొలం, జలం, చితిలో, పర్వతంపై శిథిలమగు మందిరంలో, పుట్ట, పారె నీటిలో, నది ఒడ్డున, వాయువు, అగ్ని, సూర్యులవైపు, నడుచుచు, పరుగెత్తుచు మల మూత్రముల విసర్జనలు చేయరాదు. మంచము మట్టిగడ్డ, ఆకులు పొదలతో మరుగై శరీరము కాన రానట్లు నెత్తికి గుడ్డ చుట్టుకొని మౌనముగా మలమూత్రము లను విసర్జించ వలయును.

4) అగ్గిని ఊదుచ గాక విసనకఱ్ఱ సహాయాన పెంచవలెను. సూర్యోదయము సూర్యాస్తము లందు భుజించరాదు.

5) తడిన కాళ్లతో భుజించవలయును. కాని శయనించ రాదు. వెంట్రుకలు, భస్మం, ఎముకలు, మన్నుపాత్రల

దయానంద విద్యామందిర్ గద్వాల పూర్వ విద్యార్థులు అందచేసిన విరాళాలు

ఉపాధ్యాయుడి కుటుంబానికి పూర్వ విద్యార్థుల అండ

గద్వాల పట్టణం, న్యూస్‌టుడే : జిల్లాకేంద్రంలోని దయానంద విద్యామందిర్‌లో రాజు అనే ఉపాధ్యాయుడు 30 ఏళ్ల పాటు పనిచేసి, ఇటీవలే గుండెపోటుతో మృతిచెందారు. ఎందరో విద్యార్థుల అభిమానాన్ని చూరగొన్న ఆయన కుటుంబానికి అండగా నిలబడేందుకు పాఠశాల యాజమాన్యంతో పాటు పూర్వ విద్యార్థులు ముందుకు వచ్చారు. [illegible] రాజు కుటుంబానికి ఇచ్చేందుకు ఓ నిధిని సమకూర్చారు. ఈమేరకు సోమవారం పాఠశాలలో హామీపత్రాన్ని రాజు భార్య గౌరీబాయికి అందజేశారు. పాఠశాల కార్యదర్శి బండ్ల నాగేశ్వర్‌రెడ్డి, చిలువేరి శ్రీనివాసులు, ఉపాధ్యాయులు, పూర్వవిద్యార్థులు పాల్గొన్నారు.

గౌరీబాయికి హామీపత్రం అందిస్తున్న పూర్వ విద్యార్థులు

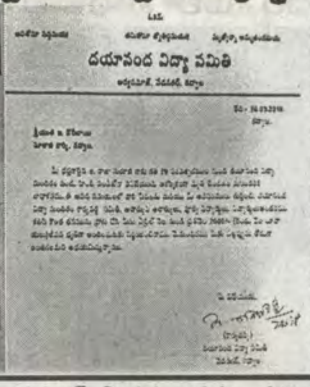

దయానంద విద్యా సమితి

I-Batch	Rs. 6,000/-	(Rajanarsimhulu)
II Batch	Rs. 3,00/-	
III Batch	Rs. 14,000/-	(Harivamshi)
V Batch	Rs. 26,500/-	(Sandeep)
VII Batch	Rs. 5,800/-	(Murali)
VIII Batch	Rs. 20,000/-	(Adarsh)
IX Batch	Rs. 8,500/-	(Kalyan)
X Batch	Rs. 1,400/-	(B. Prashanth)
XI Batch	Rs. 9,600/-	(Y. Naveen)
XII Batch	Rs. 4,800/-	(Chandra Moulali)
XIII Batch	Rs. 8,100/-	(G. Naveen)
XIV Batch	Rs. 4,700/-	(H. Sri Hari)
XV Batch	Rs. 4,200-00	(D. Sachin)

ఆర్య సమాజము ఉత్తర లాలాగూడ ద్వారా ఆర్య సమాజ్ స్థాపన దినము మరియు ఉగాది పర్వము పండుగ ఘనంగా నిర్వహించబడినది. ఈ సందర్భమున ధ్వజారోహణమును సమాజ అధికారులందరు కలసి నిర్వహించుచున్న దృశ్యమును మరియు ఇతర చిత్రములను చూడవచ్చును.

చిత్రములో ఆచార్య విశ్వశ్రవ గారిని, ఆచార్య సవితా గారిని మరియు ఆర్య సమాజ ధికారులను చూడవచ్చును

ఆర్య సమాజము రాష్ట్రపతి రోడ్, సికింద్రాబాద్ వారి ద్వార నిర్వహింపబడిన ఉగాది సంబరాలు ఉత్సవ సందర్భములో పాఠశాల కొరకు నిర్మింపబడిన భవన

సముదాయాన్ని ప్రారంభిస్తున్న ఆర్య ప్రతినిధి సభ మంత్రివర్యులు శ్రీ విఠల్ రావు ఆర్య గారు, ప్రక్కన సమాజ అధ్యక్షులు శ్రీ మాశెట్టి శ్రీనివాస్ గారు మరియు ఇతర అధికారులు. ఈ సందర్భమున యజ్ఞము నిర్వహించుచున్న చిత్రమును మరియు సంబరాల చిత్రాలను కూడ చూడవచ్చును. చిత్రములలో శ్రీ సాలికె ప్రకాశ్ గారిని మరియు ఇతర అధికారులను చూడవచ్చును.

आर्य समाज सांताक्रूज मुम्बई में वेदों में शिक्षा विज्ञान पर वैदिक मिशन मुंबई द्वारा आयोजित संगोष्ठि के उद्घाटन समारोह में बोलते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेशजी, महामंत्री प्रो. विठ्ठल राव आर्य, मिशन के अध्यक्ष डॉ. सोमदेवजी शास्त्रीजी तथा अन्य सत्रों में बोलते हुए स्वामी श्रद्धानन्दजी और बहन पूनम आर्य जी

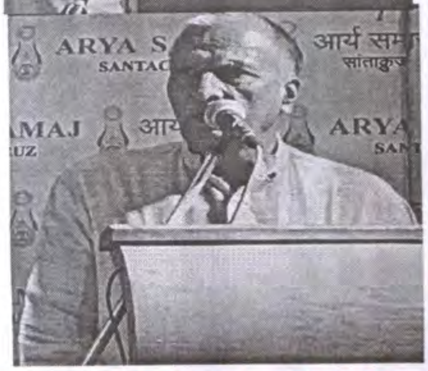

गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश अग्रवालजी, पूज्य स्वामी धर्मानन्दजी सरस्वती, स्वामी धर्मेश्वरानंदजी, श्री अरुण अबरोलजी, श्री प्रकाश आर्यजी महू आदि उपस्थित थे। समारोह के अध्यक्षता पूज्य स्वामी प्रणवानन्दजी ने की। सम्मेलन में अनेकों गुरुकुलों की आचार्यागण कई पुरोहित, सन्यासी महोदय और गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। वैदिक मिशन मुंबई द्वारा वेदों में शिक्षा विज्ञान संगोष्ठि के उद्घाटन समारोह में मुंबई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाईलाल सिंहजी इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने सारे गुरुकुलों को एक संघीय ढांचे में एकत्रित कर गुरुकुलों की महत्ता को सरकार तक पहुँचाने के लिए गुरुकुल की जननी हरिद्वार में बृहद स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन ६, ७, ८ जुलाई २०१८ को आयोजित करने की घोषणा की। देश-विदेश के सभी गुरुकुलों के आचार्यों से अपील की कि अपने-अपने विद्यार्थियों के साथ गुरुकुलों की प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए दल-बल के साथ हज़ारों की संख्या में पधारने का निमंत्रण दिया। गुरुकुलों का यह अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन इतिहास का पहला और अद्भुत सम्मेलन होगा। सभी के लिए सभी प्रकार की व्यवस्थाएं की जाएगी।

गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस की आचार्या डॉ. पवित्रा विद्यालंकारजी का महिला सम्मेलन में सम्मान करती हुई महिलाएँ

Dateof Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month

आर्य जीवन **03-04-2018** **Registered-Reg. No. HD/783/2018-20** **RNI No. 52990/93**

ఆర్యజీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Editor: **Vithal Rao Arya,** M.Sc. LL.B., Sahityaratna
Arya Prathinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-95.
Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax: 040-24557946
Annual subscription Rs. 250/- సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య, మంత్రి సభ

आर्य प्रतिनिधि सभा ने मनाई पंडित नरेन्द्र की जयंती

हैदराबाद, 25 मार्च
(मिलाप ब्यूरो)

आर्य प्रतिनिधि सभा, आंध्र प्रदेश-तेलंगाना के तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी पंडित नरेन्द्र की जयंती मनाई गई।

आज यहाँ जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, कोठी में आंध्रा बैंक के पास पंडित नरेन्द्र के प्रतिमा स्थल पर देवयज्ञ के साथ जयंती कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। सभा के उप-प्रधान पंडित हरिकिशन वेदालंकार ने यज्ञ सम्पन्न कराया। यज्ञ के पश्चात नगर भाजपा उपाध्यक्ष गोविंद राठी ने पंडित नरेन्द्र की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और उनके संघर्षों पर प्रकाश डाला। ठाकुर लक्ष्मण सिंह की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में उप-प्रधान वसुधा शास्त्री, गुरुनारायण, उपमंत्री रामचंद्र कुमार आदि ने पंडित नरेन्द्र की सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक सेवाओं को याद किया। साथ ही निजाम शासन में किये गये आर्य सत्याग्रह में उनकी भूमिका को रेखांकित किया। अवसर पर नगर में संचालित आर्य समाजों के पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित रहे। जय घोष एवं शांति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

नरेन्द्र जयंती के संदर्भ में उपस्थित जनसमूह

इस अवसर पर आर्य समाज नलगोण्डा द्वारा प्रकाशित युगादि से युगादि तक के केलेंडर का लोकार्पण किया गया।

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR
Editor : **Vithal Rao Arya • Email : acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691**

సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్‌రావు ఆర్య, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాదు-95. Ph: 040-24753827, Email : acharyavithal@gmail.com
संपादक : श्री विठ्ठलराव आर्य मंत्री सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रिन्टर्स में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।
प्रकाशकः आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-500095.